श्रावणी उपाकर्म पद्धति
सूरीनाम



रुशील रामरूप

प्रकाशक

श्री हनुमान विद्या सिन्धु

इन्दिरा गाँधी वेख, वानिका, सूरीनाम

लेखक

पण्डित श्री रुशील रामरूप जी

ISBN: 978-99914-943-1-9

Published: 25 December 2020

।श्री गणेशाय नमः।

ॐ तत्पुरुषायविद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नोदन्तिः प्रचोदयात्।

पण्डित श्री रुशील रामरूप शर्मा की लिखी श्रावणी उपाकर्म पद्धति पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। ये पण्डित जी सनातन धर्म का नूतन अस्त्र हैं, पण्डित जी की लिखी पद्धति में सांगोपांग अथ से लेकर इति तक शास्त्र विधान है। मैं जरूर आशा करता हूँ कि यह कर्मकाण्ड श्रावणी उपाकर्म पद्धति को ब्राह्मण गण पढ़ कर उपयोग में ला कर हमारे सनातन धर्म की विस्तृत उन्नति करेंगे। इस पूर्ण पद्धति को पण्डित जी ने वेद अधिकार अनुसार लिखा, जैसे पूर्ण वेद मन्त्र से प्राप्त होता है;

ॐ स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

जो द्विज हैं उनको मैं (वेदमाता गायत्री) पवित्र करती हूँ। आप की लिखी पद्धति इस वेदमन्त्र से मेल करा रही है। हृदयान्तराल से पण्डित जी को विशेष धन्यवाद जो वेद मन्त्र अधिकार अनुसार इस श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम नामक कर्मकाण्ड पुस्तक को लिखा। साथ-ही-साथ रंग का अधिकार भी ली, जैसे वसन्त ब्राह्मणे, ग्रीष्मे राजन्य और

शारदी वैश्यम्। उपाकर्म पद्धति पर जितना लिखा जाएगा उतना ही कम होगा। इस पद्धति में तो पण्डित जी ने सांगोपांग विधि लिख दी, अतः अधिक लिखने कि आवश्यकता नहीं है। पूर्ण वैदिक विधानानुसार जैसे स्नान, स्नानांग तर्पण, गायत्र्याराधन, अग्निहोत्र, ऋषि पूजन, तर्पण आदि-आदि जैसे;

सम्प्राप्ते श्रावणस्यान्ते पौर्णिमास्यां दिनो दये।
स्नातुं कुर्वीत मतिमान श्रुति स्मृति विधानतः॥

मैं बहुत न लिखते हुए यही शुभकामना प्रकट करता हूँ, कि इस पद्धति ग्रन्थ अस्त्र से समाज में अपने-अपने वर्ण अधिकार अनुसार यज्ञोपवीत पूजन, धारण आदि करने की सांगोपांग वेदविधि जो पण्डित जी ने लिखी उसका भलीभाँति सदुपयोग हों। अतः बहुत धन्यवाद दे रहा हूँ, आप की लिखी "श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम" देश-विदेश में सार्थक हो और सभी पण्डितों में प्रकाश हों। महाशक्ति देवी जी से प्रार्थना है;

ॐ सर्वज्ञा सर्वतो भद्रा सर्व मंगल मंगला।
सर्व ज्ञान प्रदा देवी सर्वज्ञा सर्व भाविनी॥

इस कविता के माध्यम से लेखनी को विराम देते हैं;

यह कर्मकाण्ड ग्रन्थ से, हो अन्धकार निशा का नाश ।
सूरीनाम के सनातन पंडितों में पद्धति से हो प्रकाश ।।



शुभचिंतक,

शास्त्रार्थमहारथी, कविरत्न, विद्याभूषण, पण्डितराज शास्त्रार्थभयंकर, महामहोपाध्याय, धर्माधिकारी;

पण्डित श्री हरिप्रसाद ज्वालाप्रसाद तिवारी जी

वानिका, सूरीनाम

।श्री गणेशाय नमः।

पण्डित रुशील रामरूप द्वारा निर्मित श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम नामक विशाल ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक और पाण्डित्य पूर्ण है। हमारे सूरीनाम देश में इस प्रकार के ग्रन्थ की अत्यन्त आवश्यक्ता रही। बहुत हर्ष की बात है कि मेरा परम शिष्य पण्डित रुशील रामरूप शर्मा ने श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम का संग्रह (संकलन) करके ऐसा अविस्मरणीय कार्य किया। पण्डित जी के इस परिश्रम से धर्म का बहुत लाभ होगा और ब्राह्मणों के लिए प्रेरणा जनक सिद्ध होगा।

इस प्रयास के लिए पण्डित जी को बहुत बधाई देते हुए विशेष आशीष प्रदान करता हूँ। और मुझे यह विश्वास है कि भविष्य में इस ग्रन्थ के माध्यम से सूरीनाम के समस्त ब्राह्मणों का और अन्य धार्मिक वर्गों का विशेष लाभ होगा, अतः यही मेरी शुभकामना भी है।



शुभचिंतक,

पण्डित श्री मोतीप्रसाद घिसाई- दूबे जी

वानिका, सूरीनाम

।श्री गणेशाय नमः।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपार संविद् सुख सागरेऽस्मिन् लीने परब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि ब्राह्मण कुल भूषण श्री पण्डित रुशील रामरूप द्वारा श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम नामक ग्रन्थ संकलित कर ब्राह्मण एवं समाज हित कि भावना से प्रकाशित किया जा रहा है। अतः इस अवसर पर मैं अपने प्रिय शिष्य को हार्दिक एवं शतशः शुभाभिनन्दन करता हुआ भगवान महाकालेश्वर से आप के दीर्घायुष्य की मंगल कामना करता हूँ।



भवदीय,

अन्तरराष्ट्रीयख्यातिप्राप्त, कथावाचस्पति;

पण्डित श्री सत्यव्रत शास्त्री जी

रतलाम, मध्यप्रदेश, भारत

|श्री गणेशाय नमः|

दो वचन

संस्कार मनुष्य को मर्यादित रूप से, जीवन जीने कि रूपरेख और जीने कि राह तय कर देता है। उपनयन संस्कार बटुक को एक अधिकार प्राप्त करा देता है। वेदों का मार्ग खुल जाता है और उपवीत धारण करना, शारीर को शुद्ध एवं मानसिक पवित्रता प्राप्ति के साथ एक उत्तरदाई जीवन का निर्माण सम्भव करा देता है।

लेखक की श्रावणी उपाकर्म पद्धति इस उपरोक्त मार्ग को दिशा एवं विधि विधान के साथ उपवीत के महत्व को इस देश में उपवीती वर्ग के लिए महिमा का उद्घाटन करती है।

पुस्तक को देखने पर केवल सराहना करनी बनती है। पण्डित रुशील रामरूप जी वेद, शास्त्र, ब्राह्मणग्रन्थ एवं कई कर्मकाण्ड सम्बन्धित पद्धतियों के सहयोग और ब्राह्मण विप्रों की सुझाव अपने सोपान बना कर 'श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम' लेखन श्रम को तय किया।

सूरीनाम में कुछ सामान्य विधि के अतिरिक्त विधान कभी सम्भव नहीं था। अब इस नई पीढ़ी के पण्डित इस विधि-विधान को समझ कर और हमारे लिए यज्ञोपवीत निर्माण और धारण करने योग्य पद्धति को श्रम

पूर्वक प्रस्तुत कर, उपनयन संस्कारी ब्राह्मणों के लिए विधिपूर्वक, उपवीत धारण करने कि महत्ता बता कर सुलभ मार्ग प्रशस्त किए हैं।

अंत में इन पंडितों के साथ, सहयोगियों को भी मेरा प्रणाम और आगे इसी प्रकार साहित्य रचना के कार्य को दिशा देते रहें। मेरा शुभाशीष और बधाइयाँ आप को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहे।



शुभचिंतक,

मणिशास्त्री, ब्राह्मणशिरोमणि, सनातनधर्मशास्त्रज्ञ;

पण्डित श्री भगवानदत्त रामकुबेर जी

पारामरिबो, सूरीनाम

।श्री गणेशाय नमः।

सूरीनाम के द्विजों के लिए यह अति हर्ष की बात है कि पूज्य श्री पण्डित रुशील रामरूप जी ने जो संघर्ष किया। आज हम सूरीनाम के सभी ब्राह्मणों के प्रति सुलभ करते हुए यह ‘श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम’ नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। अनेकानेकों ग्रन्थों एवं पद्धतियों आदि से खोजकर इसको लिखा है।

इससे अब हम द्विजों को यज्ञोपवीत का बनाना और उसका धारण करना तथा जीर्ण का त्याग कर फिर नए का धारण करने की पूरी वेदविधि इस पद्धति में प्रस्तुत कर दिया है।

मैं अति हर्ष के साथ ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें स्वस्थ जीवन के साथ एक लम्बी आयु प्रदान करें, जिससे पूज्य श्री रुशील जी और भी ऐसे विषयों का उल्लेख किया करें।



शुभचिंतक,

कर्मकाण्डभूषण;

पण्डित श्री ठाकुरप्रसाद महताबसिंह जी

वानिका, सूरीनाम

विषय अनुक्रमणिका

१. भूमिका

ॐ नमाम्यहमुमापतिं नमस्तेऽस्तु गुरुत्रयः।
येन प्रकाशितं सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः॥

मैं भगवान शंकर जी को नमन करता हूँ, जो भगवती उमा के पति हैं। साथ ही साथ अपने तीन गुरुओं (दीक्षागुरु पूज्यपाद युक्तिविषारद कर्मकाण्डभूषण पण्डित श्री मोतीप्रसाद घिसाई-दूबे जी, वेदगुरु पूज्यपाद अन्तरराष्ट्रीयख्यातिप्राप्त कथावाचस्पति पण्डित श्री सत्यव्रत शास्त्री जी और विद्या गुरु पूज्यपाद मणिशास्त्री ब्राह्मणशिरोमणि सनातनधर्मशास्त्रज्ञ पण्डित श्री भगवानदत्त रामकुबेर जी) को नमन करता हूँ, जिसके द्वारा सब कुछ प्रकाशित और समस्त अन्धकार का नाश होता है, ऐसे अपने गुरु एवं इष्ट को कोटिशः नमन करता हूँ।

आज के इस वातावरण में भी भारत से दूर सूरीनाम वर्ष के कर्मकाण्ड के पौधे पर फूल खिलते हैं। इसी प्रकार प्रयास है, यह विस्तृत 'श्रावणी उपाकर्म पद्धति सूरीनाम' नामक ग्रन्थ जो बिना वेदमाता गायत्री के मंगलाशीष से सिद्ध नहीं हो पाता, सूरीनाम के कर्मकाण्ड क्षेत्र में योगदान करें।

यह पुस्तक समाज को प्रदान करते हुए माँ गायत्री से बारम्बार यही प्रार्थना है;

ॐ स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयु: प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

उस जगतपावनी सभी वरों को प्रदान करने वाली और द्विजों* को नित्य पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री देवी की मैं विशेष स्तुति करता हूँ, हम ब्राह्मणों को आजीवन आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन, मेधा, विद्या और ब्रह्मतेज प्रदान करने वाली माता। आप ने दिया हमे मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान, जिससे हम अन्त में ब्रह्मलोक को करें पयान (मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं)।

---

*

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते।

अत्रि. अध्याय ३, श्लोक १३८॥

ब्राह्मण, ब्राह्मण पिता से जन्म लेने से ब्राह्मण कहा जाता है। जन्म से ऐसा जन्मा ब्राह्मण है और उपनयन संस्कार के कारण द्विज कहलाता है।

यत्र जलप्रपाताज्जलमति तरलं
गत हरितं वनमतिशय सुन्दरम्।
शुद्ध्यन्ति नद्यार्जगतीतलश्च समस्तं
सूरीनामवर्षस्य स्थितस्तत्र सर्वस्वम्॥

पं. रुशील रामरूप, श्लोक १॥

जहाँ शोभायमान झरनों से अति वेग से पवित्र जल गिरता है और उन झरनों के द्वारा हरे-हरे वन अतिशय सुन्दर दीखने लगते हैं। जहाँ सभी नदियाँ अपने पवित्र जल के द्वारा समस्त जगतीतल को शुद्ध करती हैं, वहीं पर सूरीनाम वर्ष का समस्त प्राकृतिक सौन्दर्य और अनुपम्ता स्थित हैं।

सिंचति यत्र जलदर्भूधरं विशालं
वहन्ति नित्यं समीरास्त्रिविधं निर्मलम्।
नमामि पूर्वजनार्विचक्रिरे यस्यान्तं
महिमानश्च नमाम्येतं पवित्रभूमिम्॥

पं. रुशील रामरूप, श्लोक २॥

जहाँ घने बादल समस्त विशाल पहाड़ों को अपने पवित्र जल से सींचते हैं, और जहाँ नित्य निर्मल शीतल मन्द सुगन्ध हवाएँ बहती हैं। जहाँ पूर्वकाल से हमारे पूर्वज लोग विचरण करते आएँ हैं, उन पूर्वजों को तथा उस महिमाशाली पवित्र भूमि (सूरीनाम वर्ष) को मैं नमन करता हूँ।

धन्य हैं हम ब्राह्मण गण जो इस पवित्र भूमि पर जन्म लिए हैं। इस ब्राह्मण शारीर की प्राप्ति को सार्थक बनाने के लिए और आंशिक ऋषि ऋण से मुक्त होने के लिए एवं सूरीनाम देश में कर्मकाण्डीय क्षेत्र को और भी महत्व प्रदान कराने के लिए इस ग्रन्थ का संकलन किया गया है।

इस ग्रन्थ में श्रावणी उपाकर्म पर्व के विवरण सविधि का यथा सम्भव निज मति अनुसार विस्तार किया गया। जिसमें वेदविधि को सर्वोच्च मान कर निर्माण से लेकर अर्पण तक अधिकांश वेदमन्त्रों का प्रयोग किया गया है।

आशा करता हूँ कि यह पद्धति दीर्घ काल तक इस पवित्र सूरीनाम वर्ष में प्रचलित एवं उपयोगी रहेगी।

यह पद्धति कुछ लोगों के बिना पूरी नहीं हो पाती इसीलिए इस कार्य की पूर्ति में जिन्हों ने भी साथ दिया, जिनमें चित्रकार संजना अनिरुद्ध-तिवारी जी, निरीक्षण समिति में पण्डित मोतिप्रसाद घिसाई-दूबे जी, पण्डित सत्यव्रत शास्त्री जी, पण्डित भगवानदत्त रामकुबेर जी, पण्डित गुरुदत्त रामकुबेर जी, पण्डित प्रशांत जग्बन्धन जी, उन सब के प्रति मेरा सादर अभिनन्दन।

अभिनन्दक,
रुशील रामरूप

।श्री हर।

।श्री गणेशाय नमः।

।श्री गुरुभ्यो नमः।

२. यज्ञोपवीत निर्माण

ब्रह्मणोत्पादितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणी कृतम् ।
रुद्रेण दत्तो ग्रंथिर्वै सावित्र्या चाभिमंत्रितम् ॥

ब्रह्माजी ने पहिले अपने साथ ही यज्ञोपवीत को उत्पन्न किया और विष्णु भगवान् ने सत्वरजस्तमो रूप तीन लरों से युक्त किया तथा रुद्र भगवान् ने गाँठ देकर गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रण कर दिया। ब्राह्मण कपास का (श्वेत), क्षत्रिय शण का (रक्त) और वैश्य उन का (पीला) यज्ञोपवीत धारण करें।

शुद्ध स्थान में स्वयं भी शुद्ध हुआ अपने हाथ की चारों अँगुलियों को मिलाकर इनके मूल स्थान पर यज्ञोपवीत के डोर को ९६ बार लपेटें (चप्पे बनाएँ) और काटें (किन्ही विद्वानों का मत है कि तन्तु को कन्या द्वारा काटें), उसके बाद निम्न मन्त्र से प्रक्षालित करें:

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिवमातरः॥ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ। आपोजनयथाचनः॥

प्रक्षालन करने के बाद उस डोर का २-३ लोगों के सहायता से विस्तार कर देवे, और उस तन्तु का ३ से भाग करें और इन ३ तन्तुओं को वामावर्त गायत्री मन्त्र से ऐंठ देवें। अब ३ तन्तु का एक लर बन गया, उस लर को पुनः ३ से भाग कर के गायत्री मन्त्र से दक्षिणावर्त ऐंठ कर ३ गाँठ देवें, एक-एक गाँठ देते हुए क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र भगवान् का स्मरण कर प्रणाम करें।

३. श्रावणी पूजन

पूजा स्थान पर आकर हाथ धोकर आचमन आदि करें:

- सर्व प्रक्षालन

  यजमान के आसन और यत्र-तत्र जल छिड़क कर स्थान पवित्र करें:

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु (३ बार)

- आसनोपवेशन

  ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छंदः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्॥

- आचमन

ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा
ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा
ॐ सामवेदाय स्वाहा
ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा, पुनः हस्तं प्रक्षालयेत्॥

- पवित्री धारण

ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

- अंग स्पर्श

बाएँ हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और अनामिका को एकत्र कर के उस जल से शरीर के अंगों को इन मन्त्रों से स्पर्श करें-

ॐ वाग्वाक् (दोनों होठों को स्पर्श करें, पहले नीचे तब ऊपर)

ॐ प्राणः प्राणः (दोनों नासा पुटों को स्पर्श करें, पहले दाहिने तब बाएँ)

ॐ चक्षुश्चक्षुः (दोनों आखों को), **ॐ श्रोत्रं श्रोत्रम्** (दोनों कान)

ॐ नाभिः, ॐ हृदयम्, ॐ कंठः, ॐ ललाटं, ॐ शिरः, ॐ शिखा, ॐ बाहुभ्यां यशोबलं (दोनों बाँहों को)

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वामे सह सन्तु (शेष जल पूरे शरीर पर छिड़कें)॥

- अभिषेचन

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ के अनामिका से प्रति मन्त्र पर अपने सिर और पूरे शरीर पर जल छिड़कें:

ॐ ॐ पुनातु, ॐ भूः पुनातु, ॐ भुवः पुनातु, ॐ स्वः पुनातु, ॐ महः पुनातु, ॐ जनः पुनातु, ॐ तपः पुनातु, ॐ सत्यं

पुनातु, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ सर्वं पुनातु।

- शिखाबंधन

ॐ ब्रह्मवाक्य सहस्रेण शिववाक्य शतेन च।
विष्णोर्नामसहस्रेण शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्।।

- श्री भैरव नमस्कार:

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

३. १. आचार्यपूजन और वरण

आचार्य को तिलक, पुष्प, गंध, दक्षिणा आदि प्रदान कर नियुक्त करें:

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।।

उसके बाद आचार्य जी से आशीष मांग कर इस प्रकार प्रार्थना करें-

ॐ अस्य यागस्य निष्पत्तो भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ।।

- कर्मपात्र निर्माण एवं यथोपचार पूजन-

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

उसके बाद कर्म पात्र के पवित्र जल से सर्वत्र सिंचन करें:

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम् ॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा । अग्निं च विश्वशंभुवम् ॥ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वेऽमम । ज्योक्च सूर्यं दृशे ॥ इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि । यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥

- रक्षादीप प्रज्वलन वेदी के पूर्वोत्तर दिशा में और उसका पूजन एवं प्रार्थना

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

ॐ भो दीप देव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वंसुस्थिरो भव ॥

- रक्षा सूत्र

आचार्य वा नियुक्त पण्डित यजमान के दाहिनी कलाई में मौली बाँधे-

ॐ यदा बध्नं दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदाया युष्मांजरदष्टिर्यथासम्॥

- लक्ष्मी दीप प्रज्वलन

ॐ महा लक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥
ॐ लक्ष्मी करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्प्रदाम्।
मम शत्रु विनाशाय दीपज्योतिः नमोऽस्तुते॥

- शंख पूजन

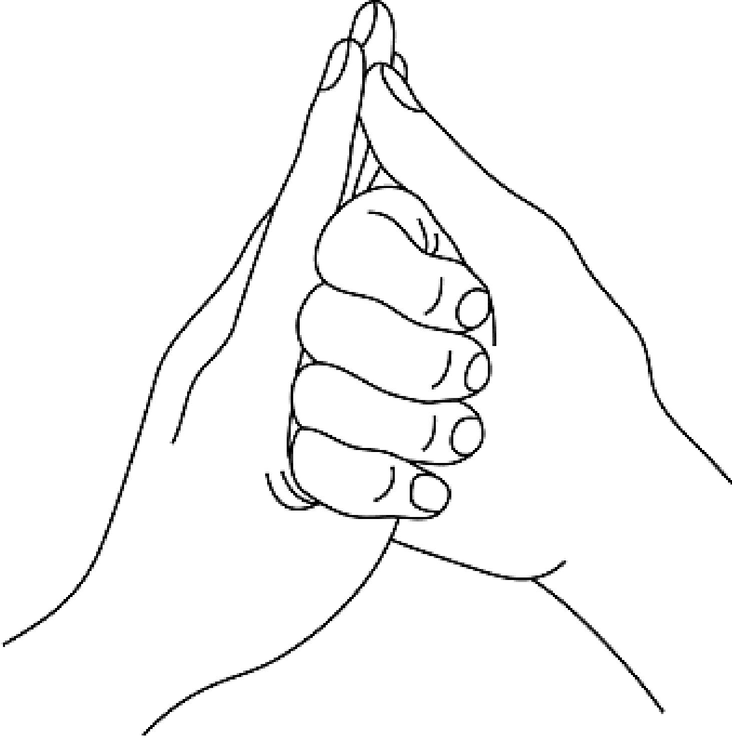
शंख को चन्दन (अर्ध चन्द्र) से लिप्त कर एक पत्ते पर वाम आधार स्थापित कर, निम्न मन्त्र से यथा उपचार पूजन करें-

ॐ शंखं चंद्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गंगा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखं तिष्ठन्ति वैनित्यं तस्माच्छखं प्रपूजयेत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः, शंखस्थदेवतामावाहयामि सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

यथोपचार के बाद में शंखस्थदेवता की निम्न मन्त्र द्वारा प्रार्थना कर शंख मुद्रा दिखावें

ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्च जन्य नमोस्तुते॥
ॐ पाँच जन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि
तन्नः शंखः प्रचोदयात्॥

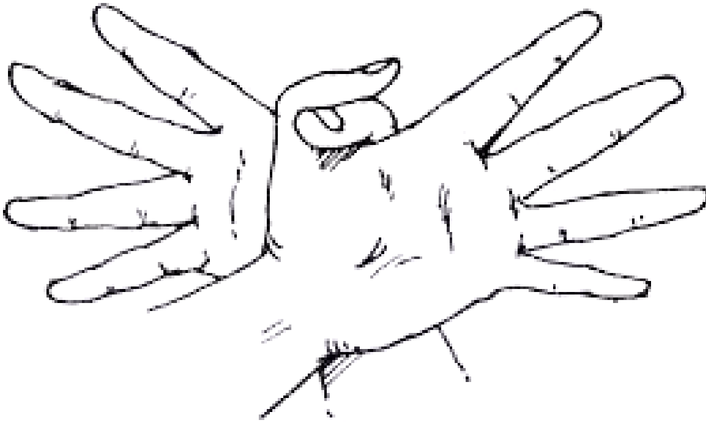


- घंटा पूजन

ॐ आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।
कुरु घंटे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घंटास्थाय गरुडाय नमः, गरुड़मावाहयामि सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

यथोपचारोपरान्त घंटा को बाएँ हाथ से बजा कर '**ॐ गन्धर्व दैवत्याय नमः**' मन्त्र से स्थापित कर दें, और नमस्कार कर के गरुड़ मुद्रा प्रदर्शित करें।



३. २. स्वस्तिवाचन

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ ॐ विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा । ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुदा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामवः ॥ ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्तेन सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवतु ॥ ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ नमो गणेभ्यो

गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

स्वस्तिवाचन के लिए भद्र सूक्त का भी पाठ कर सकते हैं।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरितास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम् । देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तुजीवसे ॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतंधिष्ण्या युवम् ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमसे हूसहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना

अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ सुशान्तिर्भवतु॥

स्वस्तिवाचन के बाद में इन मन्त्रों का भी यथा संभव पाठ करें :

सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सवार्थ साधिके।
शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

पुष्प और चावल लेकर बारम्बार नमः बोल कर नमस्कार हेतु अर्पण करें-

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। श्री उमा महेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

३. ३. संकल्प (हेमाद्रिप्रोक्त)

हरिः ॐ तत्सत् ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः स्वस्तिश्रीसमस्त जगदुत्पत्ति स्थिति लय कारणस्य रक्षाशिक्षा विचक्षणस्य प्रणत पारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमित शक्त्याध्रियमाणस्य महा जलौघ मध्ये परिभ्रममाणानामनेक कोटिब्रह्माण्डानामेकतमेऽव्यक्त महदहंकार पृथिव्यप्तेजो वायव्याकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखंडे आधार शक्ति श्री मदादि वराहदंष्ट्राग्र विराजिते कुर्मानन्त वासुकि तक्षककुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्ट महा नागैर्ध्रियमाणे ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदांजन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीकाष्ट दिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम तल वितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवाल शैल महावलय नाग मध्यवर्ति नो महाकाल महाफणिराजशेषस्य सहस्रफणामणि मण्डल मंडिते दिग्दन्तिशुंडा दण्डोद्दंडिते अमरावत्यशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्त्यलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुसुरा सर्पिर्दधि क्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षकुशक्रौञ्च शाकशाल्मलि पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यताम्र गभस्तिनागसौम्य

गन्धर्वचारण सुवर्णगिरि कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत्कोटियोजन विस्तीर्ण भूमण्डले यत्र अयोध्यामथुरामाया काशीकाञ्च्यवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरीप्रतिष्ठिते श्रीरामक्षेत्रे मध्यरेखायाः पश्चिम दिग्भागे सकल जगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादि द्वात्रिंशत कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलि संज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे सूरीनामवर्षे कुशद्वीपे उत्तरभाग उमसेनारण्यदेशे ..... क्षेत्रे ...... नगरे ..... ग्रामे श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्यसमयतः ....द्वौसहस्त्र संख्या परिमिते प्रभवादिषष्ठि संवत्सराणां मध्ये ...... नामसंवत्सरे, रवि ..... अयणे, ग्रीष्म ऋतौ, श्रावण मासे, शुक्ल पक्षे, पूर्णम्यां तिथौ, ... वासरे, ... नक्षत्रे, ... योगे, ... करणे, ... राशिस्थिते चन्द्रे, ... राशिस्थितेश्रीसूर्ये, ... राशिस्थिते देवगुरौ शेषेशु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवन वार्धक्यावस्थासु जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु च वाक्पाणि पादपायूपस्थ घ्राणरसना चक्षु:स्पर्शन श्रोत्रमनोभिश्चरितानां ज्ञाताज्ञातकामाकाम महापातकोपपातकादि संचितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान स्वर्णस्तेय गुरुदारगमन तत्संसर्ग महापातकानां

तद्व्यतिरिक्तानां बुद्धिपूर्वकाणामबुद्धिपूर्वकाणां च मनोवाक्काय कृतानामुपपातकानां स्पृष्टास्पृष्ट संकरीकरण मलिनीकरणापात्रीकरण जातिभ्रंशकरण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां रसविक्रय कन्याविक्रय हयविक्रय गोविक्रय सुतविक्रय धान्यविक्रय खरोष्ट्र विक्रय दासी विक्रय पशु विक्रय पण्य विक्रय जलचरादिजन्तु विक्रय स्थलचरादि विक्रय खेचरादि विक्रय संभूतानां ब्राह्मणपितृमातृगुरुभ्रातादि तर्जनताडनादि दोषकथन देवद्विजगोसम्बन्धि भूम्यपहारान्यायार्जित द्विजवित्तापहार गुरुवधाक्षेप सुहृद्वधस्त्रीवध तडागाद्यारामच्छेदन कर्मविषप्रयोगाभिचार सहसंग्रामोन्मादनासच्छास्त्राध्ययन चिकित्साप्रायश्चित्त शकुननीतिज्योतिः शास्त्र प्रयोग छन्दोनिन्दाकरण ऋणानपाकरण कथ्यत्वकरण न्यायाकरण धरणीवित्तहरणादि धर्मकार्य विघ्नाचरणात्मोत्कर्ष परनिन्दानृतभाषण पंक्तिभेद वृथापाकपरिशृतानां ब्रह्महत्यासम्मानानां पुष्पिणीमुखास्वादन क्षालनोदकपान नखमुख स्वादनमुखनिः सृतनीर पानापेयपान कपिलापयःपान पञ्चयज्ञोपासन परित्यागातिनिषिद्धभक्षण कूटसाक्ष्यादीनां सुरापानसम्मानानां दम्भास्त्र धारणांगवैकृत्यशूद्रसेवा नग्निकत्व ब्रह्मद्रोह बह्वशिष्टपुरोहितत्व देवलकत्वाध्व संरक्षणाश्वरत्न मनुष्यस्त्रीभूधेनुविक्षेपहरण कृषिकर्म हयादिशिक्षाभार वाहित्वशिल्पविद्याभ्यासादीनां स्वर्णस्तेय समानानां

पितृष्वसृमातृष्वसृ भ्रातृपत्नीमातुलानी भगिन्याचार्य तनयामातृसपत्नी सखिभार्या प्रवृत्ताशरणागताघात्री साध्वी वर्णोत्तमांत्यजाद्यगम्यागमनानां गुरुदारगमन समानानां गजाश्वोष्ट्रखर खड्गमहिष शरभसारमेय शार्दूल सिंह भल्लूक सूकर वृकशुकहरिणवानर चतुष्टय जम्बूकावि मेषमृगादिप्राणिवधानां संकरीकरण समानानां मयूरचाप भारद्वाज शुकचक्रवाक मीनादि क्रौञ्च बकशशहंसगृह गोधिका वधानामधैर्यादि मलिनीकरणानां निन्दितेभ्यो धनादानशूद्रसेवा नृतभाषणादि जिह्वामैथुनादि कोपात्यंतविषयासक्त कृतघ्नता दीनामपात्रीकरणानां अयोनिपशुयोनि रेतोत्सर्जनयति गोब्राह्मणवृत्तिच्छेदनपुंमैथुन शास्त्रनिन्दा गोसंचिततृण संचयाग्निप्रदानानां जातिभ्रंशकरणानां मुखनासारंध्रकरणार्हासन प्रदानविनिमय वृद्ध्युपजीवन विषमवाक्कशादण्डपाश संग्रहणक्रीडानाट्य तत्कालदन्तधावनाभ्यङ्गमैथुन क्षौरनिस्वापादीनां वेश्यागमन शूद्रीदासीगमन विधवागमन कन्यागमन पितृव्यपत्नीगमन रजस्वलागमन स्वगोत्रागमन तिर्यग्योनिगमन प्रतिलोमजागमन साधारणस्त्री गमनानृतुभार्याभिगमन सुतवधूगमनानां एकादश्यन्नशूद्रान्न गणिकान्न गणान्नभिन्न कांस्यभोजनादिताल वृक्षफलभक्षण पलाण्डुभक्षण ताम्बूलादि चर्वणानां अहः खट्वारोहण चित्रवस्त्रालंकार स्वप्नेन्द्रिय निपातितानां संघानादिनाष्टमी चतुर्दशीदिवाभोजन भानुवारे पर्वरात्रिभोजनादि

गृहिण्यागर्भिण्यागमन मनोरथक्षारव्रात्यान्न पतितप्रेरितान्न तुरुष्कान्नोच्छिष्टान्न कारागृहनिवासभोजन तुरुष्कमध्येनिवास तुरुष्कस्पृष्टद्रव्योपभोग तुरुष्कस्पर्श तुरुष्कदेशनिवासादीनां कुग्रामवास वाङ्गिनष्ठुरदुर्गृह दुर्भाण्ड दुर्भोजनापक्वपाक यत्नकटकान्न नखनिकृन्तन नदीलंघन समुद्रस्नान ब्राह्मण वृत्तिच्छेदनाभक्ष्य भक्षणानिमित्त भार्याविसर्जन ब्राह्मणद्वेषद्विजभेद मित्रभेद स्त्रीपुरुषभेद स्थूलसूक्ष्म जीवहिंसन क्रूरकर्मानृतलुब्धक पिशुनचौर पाखण्डनारीलंपट चाण्डाल शवास्थिस्पर्श गृंजनभक्षण लशुनभक्षण मसूरान्नभक्षण मार्जारोच्छिष्टभोजन पतितपङ्क्तिभोजन पतितसम्भाषणादीनां बालस्तेय ऋणापाकरणानाहिताग्नि तापक्रय परिवेदभृत काध्ययनादान भृत्याध्यापन परदार परवित्तवात्सल्य स्त्रीशूद्रक्षत्र विट्बंधु निन्दार्थोपजीवन नास्तिक्यव्रतलोप कुप्यपशु स्वाध्यायत्यागस्तेयायाज्य याजन पितृमातृसुतत्याग तडागारामविक्रय कन्यासंदूषण परनिन्दकयाजन तत्कन्याप्रदान कौटिल्यव्रतलोपन स्वार्थक्रियारम्भपरस्त्रीनिषेवण स्वाध्यायाग्नि सुतत्याग बान्धव त्यागेन्धनार्थद्रुमच्छेदन स्त्रीहिंसौषधि जीवनहिंस्रमन्त्रविधानव्यसनात्म विक्रय शूद्रप्रेष्यहीनयोनि निषेवणानां भ्रमवास परान्नपुष्टत्वासच्छास्त्राधिगत प्राकाराधि कारित्व भार्याविक्रयाद्युपपातकानां तथैकादशाहादि श्राद्धान्नभोजन हस्तदत्तशूद्रदत्तघृतादि भोजनापोशन रहितभोजन यज्ञोपवीत

रहितान्नभोजनपरान्नभोजन रेतोमूत्रादिभक्षण मृल्लोष्टभक्षण वैश्वदेव रहितादिदूषितान्नभोजन शूद्रादिम्लेच्छान्नभोजन पुंसवनसीमन्तोन्नयनादिभोजन जातकर्मादिभोजन नीलवस्त्र परिधानभोजनोच्छिष्टभोजन कुत्सितपंक्तिभोजन चाण्डाल कूपभाण्डोदकपान चाण्डालस्पृष्ट जलक्षीरादिपान द्विजद्रव्यापहरण श्राद्धदिनेगमन दिवामैथुनोन्मादक द्रव्यभक्षण सूर्योदयास्तशयन पतितादि दुष्टप्रतिग्रहप्रायश्चित्तद्रव्य प्रतिग्रहस्वनिषिद्ध वृत्तिधनार्जन मिथ्याब्राह्मणक्रोधोत्पादन बलात्कारित म्लेच्छादिसंसर्ग म्लेच्छभाषण परस्परानुरक्तद्वेषोत्पादनेन्द्र धनु:प्रदर्शन श्राद्धनिमन्त्रित ब्राह्मणानाह्वानदेवागार कृतेष्टशिलादिहरण व्रतभंगखरोष्ट्रादियान शिवनिर्माल्यस्पर्श शिवद्रव्योपजीवन विष्णुद्रव्योपजीवनोपाधिक त्रैवर्णकदेवार्चन द्वेष्याभिचारण कूटमन्त्र कूटहोमकरण पूज्यापूजनापूज्यापूजन परवृत्तिहरण शरणागतपरित्राणाकरण कृतोपकारविस्मरण विविधकपट विद्योपजीवनपरविवाहान्तराय करणदेवर्षि द्विजनिन्दा करण परमसंमानदूरीकरण गुणयुक्तस्यापमानकरण अकालभोजनादेशभोजन सार्वकालिक परद्वेष्याभिनिवेश परमार्थाचिन्तन यनयजनयाजन होमदानान्तराय करणादिसर्वपापानां विनाशार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवब्राह्मणसवितृ सूर्यनारायणसन्निधौ स्नानगहं च अधितानामध्येष्यमाणानां चाध्यायानां स्थापनविच्छेदकोश घोषणदन्त विवृतिदुर्वृत्त द्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां गलोप लम्बितविवृतोच्चारित

वर्णानां पूर्वसवर्णानां श्लिष्टास्पष्टवर्णविघट्टनादिभि: पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वं तत्परिहारार्थमष्टत्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्यासंचरत: शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छान्त्यजादे: शृण्वतोऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वार पदच्छेदकण्डिकाव्यञ्जन ह्रस्वदीर्घप्लुत कण्ठतालुमूर्द्धन्योष्ठ्य दन्त्यनासिकानुनासिकरेफजिह्वामूलीयोपध्मानियोदात्तानुदात्तस्वरि तादीनां व्यत्ययेनोच्चारे माधुर्याक्षिरव्यक्तिहीनत्वाद्यनेक प्रत्यवायपरिहारपूर्वकं सोस्यवेदस्य सवीर्यत्वसम्पादनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं शुक्लयजुर्वेदोत्सर्गोपाकर च ऐश्वर्याभिः वृद्धयर्थं अप्राप्तलक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमनः इप्सितकामना संसिद्धयर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं समस्तभयव्याधि जरापीडामृत्यु परिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याद्यभिवृद्धर्थं तथा च कुण्डली अन्तर्गतराशे: सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानस्थित क्रूरग्रहस्तै: संसूचितं सूचयिष्यमाणश्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशद्वारा सर्वदा एकादशस्थान स्थितवच्छुभफल प्राप्त्यर्थं आदित्यादि नव ग्रहानूकूलतासिद्धयर्थं इन्द्रादि दशदिक्पालप्रसन्नतासिद्धयर्थम् आधिदैविक आधिभौतिक आध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाम मोक्षफलावाप्त्यर्थं यथाज्ञानं यथामिलितोपचारद्रव्यै: अस्मिन् क्षेत्रे श्रावणी उपाकर्म अन्तर्गतेयज्ञाचार्य पूजन उपरांते ..., ... गोत्रोत्पना: ..., ... ब्राह्मणा:, तेषान्निमित्ते .... गोत्रोत्पन्नस्य ....

ब्राह्मण: एष नद्यसमीपस्य तीर्थे कलशस्थापनपूर्वकं गणेशाम्बिकाभ्यां पूजनं च गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातृका पूजनं च नवग्रहमण्डल मध्ये सूर्यादि नवग्रह अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणेशादिपञ्चलोकपाल इन्द्रादिदशदिक्पाल वास्तोष्पति क्षेत्रपालदेवता पूजनं च उमामहेश्वराभ्यां शालग्रामस्नानपूर्वक: लक्ष्मीनारायणाभ्यां हनुमद्देवता च प्रधान श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती पूजनं च अग्नि पूजनं च गायत्री होम च यथा उपलब्ध उपचार सहितं एष पूजनं च श्रावणी दश विध स्नानानिन्यूनयज्ञोपवीतधारणं तत्रादौ विशेष गायत्रीदेवी एवं सप्त ऋषि पूजनं च सूक्त त्रय वेदाध्ययन सहित शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ पाठं च पूर्णतर्पणं करिष्ये।

३.४. सर्वदेव पूजन

- कलश स्थापन

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ँ ह पृथिवीं माहि ँ सीः॥

कलश स्थापित किये जाने वाली भूमि पर रोली से अष्टदल कमल बना कर उत्तान हाथों से भूमि का स्पर्श करें-

ॐ महीद्यौः पृथिवी चन इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥

धान्य प्रक्षेप-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वो दानायत्वा व्यानायत्वा।
दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविताहिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

कलश स्थापन-

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विंदवः। पुनरूर्जा नि वर्तस्वसानः। सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥

कलश में जल डालें-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।

कलश में चन्दन-

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥

कलश में सर्वौषधि-

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनै नु बभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च॥

कलश में वस्त्र-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः॥

कलश के कंठ में रक्त सूत्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो॥

कलश में पुष्प-

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

कलश में दूर्वा-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

कलश में पंचपल्लव डालें-

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

कलश में पवित्र कुश डालें-

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्ययत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

कलश में सप्तमृत्तिका डालें-

ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।

कलश में सुपारी डालें-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।

कलश में पंचरत्न डालें-

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानि दाशुषे ।।

कलश में दक्षिणा डालें-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

कलश पर पूर्णपात्र -

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो ।।

पूर्णपात्रोपरि श्रीफल अथवा लक्ष्मी दीप प्रज्वलन-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाणसर्वलोकम्म इषाण।।

कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन-

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश ँ समान आयुःप्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि।

- गणेशाम्बिकाभ्यां पूजन

ध्यान-

ॐ गजाननं भूत गणादिसेवितं कपित्थजम्बू फलचारुभक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥
ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

आवाहन-

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा न यति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील वासिनीम्॥

प्रार्थना-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥
नमस्तेब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय तेनमः नमस्तेरुद्ररूपाय करिरुपाय तेनमः।
विश्वरूपस्वरूपायनमस्तेब्रह्मचारिणेभक्तप्रियायदेवायनमस्तुभ्यंविनायक।

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भवनित्यमेव॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रियेताम् न मम।

- कलश पूजन

ध्यानम्-

वरुणः पाशभृत्सौम्यः प्रतीच्यां मकराश्रयः।
पाशहस्तात्मको देवो जलराश्यधिपो महान्॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जले स्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्रा सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ॥

प्रार्थना-

देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विघृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, प्रार्थापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

जल लेकर-

ॐ कृतेन अनेनपूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

- अग्नि पूजन

ध्यान-

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽ३ आसादयादिह॥

ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवा मर्त्यां२ आविवेश॥

प्रार्थना-

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, प्रार्थापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

- गणेश सहित गौर्यादिषोडशमातृका पूजन

ध्यान-

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।

गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पुज्याश्च षोडश॥

प्रार्थना-

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशसहितगौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः,
प्रार्थापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

- **नवग्रह पूजन**

१- सूर्य (मध्य में गोलाकर, लाल)

सूर्य का आवाहन (लाल अक्षत-पुष्प लेकर)-

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि।

२- चन्द्र (अग्निकोण में, अर्धचन्द्र, श्वेत)

चन्द्रका आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)-

ॐ इमं देवा असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय
महतेज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ँ राजा॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्रशुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि।

३- मंगल (दक्षिण में, त्रिकोण, लाल)

मङ्गल का आवाहन (लाल फूल और अक्षत लेकर)-

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वःअवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि।

४- बुध (ईशानकोण में, हरा, धनुष)

बुध का आवाहन (पीले, हरे, अक्षत-पुष्प लेकर)-

ॐ उदबुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यंसौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध! इहा गच्छ इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि।

५- बृहस्पति (उत्तर में पीला, अष्टदल)

बृहस्पति का आवाहन (पीले अक्षत-पुष्प से)-

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ्वव स ऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहिचित्रम्। उपयामगृहीतोऽसिबृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भोगुरो ! इहा गच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि।

६- शुक्र (पूर्व में श्वेत, पञ्चकोण)

शुक्र का आवाहन (श्वेत अक्षत-पुष्प से)-

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियंविपान ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोऽमृतंमधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्रशुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहा गच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि।

७- शनि (पश्चिम में, काला मनुष्य)

शनि का आवाहन (काले अक्षत पुष्प से)-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुव स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहा गच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि।

८- राहु (नैर्ऋत्यकोण में काला मकर)

राहु का आवाहन (काले पुष्प से)-

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुव स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि।

९- केतु (वायव्यकोण में, कृष्ण खड्ग)

केतु का आवाहन (धूमिल अक्षत पुष्प लेकर)-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भवजैमिनिगोत्र धूमवर्ण भो केतो ! इहा गच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि।

- **अधिदेवता पूजनः**

१०- ईश्वर (सूर्य के दायें भाग में)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि।

११- उमा (चन्द्र के दायें भाग में)-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः, उमामावाहयामि, स्थापयामि।

१२- स्कन्द (मंगल के दायें भाग में)-

ॐ यदक्रन्दः प्रथमंजायमानः उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते अर्वन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि, स्थापयामि।

१३- विष्णु (बुध के दायें भाग में)-

ॐविष्णोरराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्त्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

१४- ब्रह्मा (बृहस्पति के दायें भाग में)-

ॐ ब्रह्म यज्ञानंप्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

१५- इन्द्र (शुक्र के दायें भाग में)-

ॐ सजोषाइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
जहि शत्रूं२ रपमृधो नुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

१६- यम (शनि के दायें भाग में)-

ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि।

१७- काल (राहु के दायें भाग में)-

ॐ कार्षिरस समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि।
समापोऽअद्भिरग्मतसमोषधी भिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः, कालमावाहयामि, स्थापयामि।

१८- चित्रगुप्त (केतु के दायें भाग में)-

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि।

- **प्रत्यधिदेवता पूजनः**

१९- अग्नि (सूर्य के बायें भाग में)-

ॐ अग्निदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ२ ऽआसादयादिह ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

२०- अप् (चन्द्र के बायें भाग में)-

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातनमहेरणाय चक्षसे ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि, स्थापयामि।

२१- पृथ्वी (मंगल के बायें भाग में)-

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी ।

यच्छा नः शर्म स प्रथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि।

२२- विष्णु (बुध के बायें भाग में)-

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।

समूढमस्य पा ँसुरे स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

२३- इन्द्र (बृहस्पति के बायें भाग में)-

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।

देवसेनानामभिभंजतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

२४- इन्द्राणी (शुक्र के बायें भाग में)-

ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः । पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि, स्थापयामि।

२५- प्रजापति (शनि के बायें भाग में)-

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि, स्थापयामि।

२६- सर्प (राहु के बायें भाग में)-

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः, सर्पानावाहयामि, स्थापयामि।

२७- ब्रह्मा (केतु के बायें भाग में)-

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

- **पञ्चलोकपालदेवता पूजनः**

२८- गणेश जी का आवाहन और स्थापन-

ॐ गणानान्त्वागणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपति ँ हवा महे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

२९-	देवी दुर्गा जी का आवाहन और स्थापन-

ॐ अंबेऽअंबिकेऽम्बालिकेनमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि।

३०-	वायु का आवाहन और स्थापन-

ॐ आ नोनियुद्भिःशतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि।

३१-	आकाश का आवाहन और स्थापन-

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसाम्व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशःप्रदिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश! इहागच्छ, इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि, स्थापयामि।

३२-	अश्विनीकुमारों का आवाहन और स्थापन-

ॐ यावांकशामधुमत्यश्विनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ! इहागच्छ, इह तिष्ठ अश्विभ्यां नमः, अश्विनावाहयामि, स्थापयामि।

- **दशदिक्पाल पूजन:**

३३- (पूर्व में) इन्द्र का आवाहन और स्थापन-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्दम्।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

३४- (अग्निकोण में) अग्नि का आवाहन और स्थापन-

ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च बन्ध्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ँ रक्षमाणस्तवव्व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने! इहागच्छ, इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

३५- (दक्षिण में) यम का आवाहन और स्थापन-

ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम! इहागच्छ, इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि।

३६- (नैऋत्यकोण में) निर्ऋति का आवाहन और स्थापन-

ॐअसुन्नवन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य।
अन्यमस्मदिच्छ सातऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते! इहागच्छ, इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि।

३७- (पश्चिम में) वरुण का आवाहन और स्थापन-

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण! इहागच्छ, इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि, स्थापयामि।

३८- (वायव्यकोण में) वायु का आवाहन और स्थापन-

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायु! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि।

३९- (उत्तर में) कुबेर का आवाहन और स्थापन-

ॐ वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर! इहागच्छ, इह तिष्ठ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि।

४०- (ईशानकोण में) ईशान का आवाहन और स्थापन-

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि, स्थापयामि।

४१- (ईशान-पूर्व मध्ये) ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन-

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

४२- (नैऋत्य-पश्चिममध्ये) अनन्त का आवाहन-स्थापन-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः सर्मसप्रथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि।

- शालग्रामस्नानपूर्वक: लक्ष्मीनारायणाभ्यां पूजन

पहिले पुष्प लेकर भगवन शालग्राम का ध्यान करें, फिर शालग्राम को शुद्ध जल से प्रक्षालन कर के एक कटोरी में तुलसी दल के ऊपर स्थापित करें स्नान कराने के लिए घंटी ध्वनि और बाजे के साथ में पुरुष सूक्त के माध्यम से ३ बार जल, ५ बार पंचामृत, पुनः ३ बार जल से स्नान कराएँ।

श्री शालग्राम स्नान-

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलस्नानार्थमर्पितम्॥

जल से स्नान कराकर पंचामृत स्नान करावे (घंटा, शंख और बाजे के साथ);

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

स्नान कराने के बाद शालग्राम भगवान को पोंछ कर सिंहासन पर पुनः स्थापित करें और लक्ष्मीनारायण भगवान का ध्यान करें।

ध्यान-

ॐ सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षः स्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥
ॐ या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया॥
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगजखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।
नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमांगल्ययुक्ता॥

प्रार्थना –

ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये, सहस्रपादाक्षिशिरोरु बाहवे।
सहस्र नाम्ने पुरुषायशाश्वते, सहस्रकोटी युग धारिणे नमः॥

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

- उमामहेश्वराभ्यां पूजन

ध्यान-

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

प्रार्थना-

ॐ वन्दे देवं उमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगतकारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्॥
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥

- **हनुमद्देवता पूजन**

ध्यान-

उल्लङ्घ्यसिन्धोः सलिलंसलीलं यः शोकवह्निंजनकात्मजायाः।
आदायतेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम्॥
यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥

प्रार्थना-

ॐ अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥
ॐ गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥

- क्षेत्रपाल पूजन

ॐ न हि स्पर्शमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥
ॐ श्रीक्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

प्रार्थना-

ॐ नमो क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
देहि मे आयुरारोग्ये निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।
अनेन पूजनेन श्रीक्षेत्रपालः प्रीयताम्॥

- देवी पूजन

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम्॥
ॐ जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

- सर्वोपचारः

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ
ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ ॥
ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

आसन-

ॐ रम्यं शुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्य करं शुभम् ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, आसनं प्रतिगृह्यताम्।

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, पुनराचमन-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, एतानि पाद्यार्घ्य आचमनीयस्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।

दुग्धस्नान-

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान –

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।

सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँषि तारिषत्॥

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

घृत स्नान-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।

अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।

घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।

मधुस्नान-

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँरजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ२ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।

तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।

शर्करास्नान-

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्।
अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय
त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वाजुष्टतमम्॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नान-

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

आचमन –

शुद्धोकदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः॥
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ँ सं व्ययस्व विभावसो॥
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्ध-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, गंधं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीततेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

अक्षत-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला-

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

चन्दन-

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

सिन्दूर-

ॐ सिन्धोरिवप्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

हरिद्रा-

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः॥
हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादि समन्वितम्।
सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, हरिद्रां समर्पयामि।

धूप-

ॐ धूरसिधूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतंयोऽस्मान् धूर्व्वीतितं धूर्व्वयंवयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमंजुष्टतमं देवहूतमम्॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप-

ॐ अग्निर्ज्योतिज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन -**‘ॐ हृषीकेशाय नमः’** कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य-

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ२ अकल्पयन्॥
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
ॐ मध्येमध्ये पानीयं समर्पयामिउत्तरापोशनं समर्पयामि
हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।

करोद्वर्तन-

ॐ अ ँ शुना ते अ ँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥
चन्दनं मलयोद्भुतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल-

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः .... नमः,
मुखवासार्थं एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ....नमः,
कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

- क्षेत्रपाल पूजनोपरान्त बलि:

एक केले के पात्र में कुश बिछा कर नैवेद्य, माषान्न, जलपात्र आदि रखकर हल्दी, चन्दन, सिन्दूर, काजल, द्रव्य, चौमुखी वा लेवांकर्पूर दीप से उसे सजाकर बलि प्रदान करें।

पूजा कर ध्यान करें-

भ्राजद्ववक्त्राजटाधरं त्रिनयनं नीला नाद्रिप्रभं
दोर्दण्डान्तगदाकपालमरुणं श्रग्गन्धवस्त्रावृतम्।
घण्टाघुर्घुरुमेखलाध्वनिमिलद्धुंकारभीमं प्रभुं
वन्दे संहितसप्रपकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालं सदा॥

हाथ में जल लेकर-

ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो! महाबलपराक्रम!।
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमोस्तु ते॥

श्रीक्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेतपिशाचडाकिनीपिशाचिनी- मारीगण-वेतालादिपरिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुखदीपदधिमाषभक्तवबलिं समर्पयामि।

जल छोड़कर प्रार्थना करें-

भो भो क्षेत्रपाल ! स्वं क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष यज्ञं परिरक्ष
मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु
आयुःकर्ता क्षेमकर्ताशान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता
वरदो भव ॐ अनेन बलिदानेन श्रीक्षेत्रपालः प्रीयताम्।

४. स्नान

जल में आकर पूर्वाभिमुख अपने समस्त गुरुओं को स्मरण करें:

ॐ उभा कवी युवा यो न धर्मः परापतत्।
परिसख्यानि धर्मिणो विसख्यानि विसृजामहे॥

स्नानविनियोग-

ॐ इषेत्वादि खंब्रह्मान्तेषु याः क्रियास्तत्र विवस्वान् ऋषिः सर्वाणि यजू ँषि सर्वाणि छन्दा ँसि प्रजापतिर्लिंगोक्ता देवताः स्नानादिसर्वकर्मसु विनियोगः।

स्नानाज्ञा हेतु इन मन्त्रों का उच्चारण करें-

ॐ नमोऽस्तु देवदेवाय शितिकण्ठाय वेधसे।
रुद्राय चापहस्ताय दण्डिने चक्रिणे नमः॥
सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरीयसी।
सन्निधात्री भव त्वं च सर्वपापप्रणाशिनी॥
यद्वासागरनिर्घोष दण्डहस्तासुरान्तक।
जगत्स्रष्टर्जगन्मित्र नमामि त्वां सुरान्तक॥
तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञाम दातुमर्हसि॥
नमामि गंगे तव पादपंकजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।

भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम् ॥

उत्तिष्ठन्तु महाभूता ये भूता भूमिवासिनः ।
भूतानामवरोधेन स्नानकर्मसमारभे ॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता तीर्थदूषकाः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥

त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव गजतः पिता ।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तुते ॥

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव ।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥

अधिष्ठात्र्यश्च तीर्थानां तीर्थेषु विचरन्ति याः ।
देवस्ताः प्रयच्छन्तु स्नानानुज्ञां मम सर्वदा ॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।
नरमदेसिन्धुकावेरीजलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

अब अंजलि में जल लेकर तीर्थ का अभिमन्त्रण करें:

ॐ उरु ँ हिराजाव्वरुणश्चकार सूर्य्याय पन्थामन्वेतवाऽउ ।
अपदेपादाप्प्रतिधातवेकरुतापवक्ता हृदयावधश्चित् ॥
नमोव्वरुणायाभिष्ठितो व्वरुणस्यपाशः ॥

तब दाहिने हाथ के अंगुलियों से तीर्थ जल को ३ बार दक्षिणावर्त घूमावे:

ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।
तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः ॥

इस मन्त्र से पुनः जल लेवें:

ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषदयः सन्तु ॥

तब निम्न मन्त्र से उस जल को अपने शत्रु के नाश हेतु अपने वाम भाग से पीछे की ओर फेंक दें:

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्मः॥

४.१. दशविध स्नान

तब दशविध स्नान करें:

भस्मस्नान-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः ॥
ॐ यथाऽग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादिसञ्चयम्।
तथा दह्यतां पापं कुरु भस्म शुचे शुचिम्॥

मृत्तिका स्नान-

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्, समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥
ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे ॥

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके हरमे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥
मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्॥

गोमय स्नान-

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥
गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला।
स्नानार्थं संस्कृता देवी पापं मे हर गोमय॥
अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥
यन्मे रोगं च शोकं च तन्मे दहतु गोमय॥

पञ्चगव्य स्नान-

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि ँ सवर्त स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्प्पिः समन्वितं।
सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातु माम्॥

गोरज स्नान-

ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥

गवां खुरेण निर्द्धूतं यद्रेणु गगने गतम्।

शिरसा तेन संलेपे महापातकनाशनम्॥

धान्य स्नान-

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वो दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविताहिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वां महीनां पयोसि॥

धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतम्।

तेन स्नानेन देवेश मम पापं व्यपोहतु॥

फल स्नान-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः॥

वनस्पतिरसो दिव्यः फलपुष्पवृतः सदा।

तेन स्नानेन मे देव फलं लब्धमनन्तकम्॥

सर्वौषधी स्नान-

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।

मनै नु बभ्रूणामह ँ शतं धामानि सप्त च॥

औषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तुयाः।

दूर्वासर्षपसंयुक्ताः सर्वौषध्यः पुनन्तु माम्॥

कुशोदक स्नान-

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः।
कुशाग्रे शंकरो देवस्तेन नश्यतु पातकम्॥

हिरण्य स्नान-

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

४. २. श्रावणी स्नान

दशविधस्नानोपरान्त अपने वाम हाथ में मृत्तिका लेकर ३ भागों में बाँट दे और दक्षिण हाथ से प्रथम भाग लेकर नाभिभाग और कटिभाग में तूष्णीं (मौन) लीप दें।

दाहिने हाथ को धोकर अब दूसरे भाग को लेकर वस्ति ऊरू जंघा चरण और हाथ में लगावें। पुन: हाथ धो लें।

अब तीसरे भाग को ललाट से नाभि पर्यन्त इस मन्त्र से लीपें-

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा॥

तब हाथ धो कर तीर्थ के जल को नमस्कार करें-

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।

मृत्तिके हरमे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥
मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि काश्यपेनाभिवन्दिता।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्॥

तब क्रमश: इन मन्त्रों से २ बार स्नान करें-

ॐ आपो अस्मान्मातर: शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व: पुनन्तु। विश्व ँ हिरिप्रम्प्रवहन्ति देवी:॥ ॐ उदिदाभ्य: शुचिरापूतऽएभि: ॥

इसके बाद तीसरी बार तूष्णीं स्नान करें।

अब अपने वाम हाथ में गोमय लेकर यथापूर्व तीन (३) बार भाग दें। अब दक्षिण हाथ से प्रथम भाग लेकर नाभिभाग और कटिभाग में तूष्णींलीप दें।

दाहिने हाथ को धोकर अब दूसरे भाग को लेकर वस्ति ऊरू जंघा चरण और हाथ में लगावें। पुन: हाथ धो लें।

अब तीसरे भाग को दाहिने हाथ में लेकर गोमय को आमन्त्रित करें-

ॐ **अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।**
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥

और ललाट से नाभि पर्यन्त इस मन्त्र से लीपें-

ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥

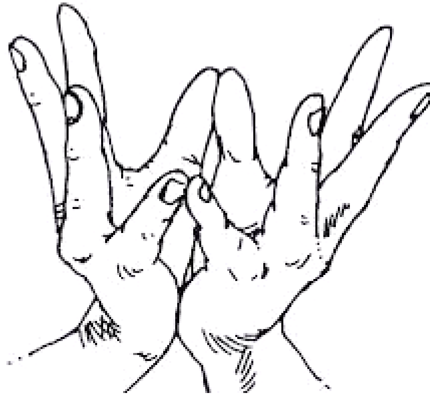
पूर्ण शरीर को धो लें और वाम हाथ में भस्म को लेवें और आमन्त्रित करें-

ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्व ँ हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षू ँ षि भस्मानि ॥

अब सभी अंगों में भस्म लगावें-

ॐ प्रसद्यभस्मनायोनिमपश्च पृथिवीमग्रे ।
स ँ सृज्यमातृभिष्ट्वञ्जोतिरष्मान्पुनरासदः ॥

पुनः स्नान कर के कुम्भमुद्रा से अपने सिर पर जल गिराता हुआ इन मन्त्रों से अभिषिञ्चन करें-



ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ॥ मापोमौषदीहि ँ सीर्द्धाम्म्नो धाम्म्नो राजस्ततो वरुण नो मुञ्च । यदाहुरग्घ्न्या इति वरुणेति शपामहततो वरुणनो मुञ्च ॥ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमस्य

पड्बीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्॥ अवभृथनि चुम्पुणनि चेरुरसि निचुम्पुण:। अवदेवैर्द्देवकतमेनो यासि षमव मर्त्यैर्म्मर्त्य कृतम्पुरु राव्णो देवरिषस्पाहि ॥

फिर स्नान करके त्रिकुश दाहिने हाथ में लेकर तीर्थजल से नाभि से वाम कन्धे के ऊपर से पीठ तक प्रदक्षिणा क्रम से अपने को पवित्रकरें।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥ इदमाप: प्रवहता वद्यश्च मलश्च यत्। यच्चाभि दुद्रोहानृतँयच्च शेपे अभिरुणम्॥ आपोमातस्मादेनस: पवमानश्च मुञ्चतु॥हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ२ आविवासति। हविष्मान्देवो अदूध्वरो हविष्माँ२ अस्तुसूर्य्य:॥ देवीरापो अपान्नपाद्योव ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तम:। तन्देवेभ्यो देवत्रादत्त शुक्क्रपेभ्यो येषाम्भागस्त्थ स्वाहा ॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि । समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ अपोदेवामधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वतीराजस्वश्चितानाः। याभिमित्राव्वरुणावभ्यषिञ्चन्न्याभिरिन्द्रमनयन्नत्य रातीः॥ द्रुपदादिवमुमुचान: स्विन्न: स्नातोमलादिव।पूतम्पवित्रेणे वाज्यमाप: शुन्धन्तुमैनस:॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ अपोदेवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्य:। तासामास्त्थानादुज्जि

हतामोषधयः सुपिप्पलाः॥ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः सोम्यासः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वं आयुर्व्यश्नवै॥ अग्न ऽ आयू ँ षि पवस ऽ आ सुवोर्जम् इषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२ऽरनु॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥ पवमानः सो ऽ अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥ वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्॥

तब जल स्पर्श कर के कुश और अपामार्ग से मार्जन करें।

नाभि के उपर-

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्ययत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

नाभिमध्ये-

ॐ वाक्पतिर्मा पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

नाभि के नीचे-

ॐ देवोमा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

सर्वांग-

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्ययत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

पुन: सर्वांग मार्जन करें:

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके॥
ॐ पुनातु॥

ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ँ समा न आयुः प्र मोषीः॥
ॐ भूः पुनातु॥

ॐ त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥
ॐ भुवः पुनातु॥

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ
अवयक्ष्व नो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो नऽएधि॥

ॐ स्वः पुनातु ॥

ॐ मापोमौषदीहि ँसीर्द्धाम्म्नो धाम्म्नो राजस्ततो वरुण नो मुञ्च ।
यदाहुरग्घ्न्या इति वरुणेति शपामहततो वरुणनो मुञ्च ॥
ॐ महःपुनातु ॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम ॥
ॐ जनः पुनातु ॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्बीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥
ॐ तपः पुनातु ॥

ॐ अवभृथनि चुम्पुणनि चेरुरसि निचुम्पुणः ।
अवदेवैर्द्देवकतमेनो यासि षमव मर्त्यैर्म्मर्त्य कृतम्पुरु राव्णो
देवरिषस्पाहि॥
ॐ सत्यं पुनातु ॥

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
ॐ सर्वं पुनातु ॥

पुन: ३ बार अपामार्ग से मार्जन करें-

ॐ अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपोरप:।
अपामार्गत्वमस्मदपदु: ष्वप्न्य ँ सुव॥

दूर्वांकुर मार्जन-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

जल में अघमर्षण करते हुए इस मन्त्र को ३ बार बोलें-

ॐ द्रुपदादिवमुमुचान: स्विन्न: स्नातोमलादिव।
पूतम्पवित्रेणे वाज्यमाप: शुन्धन्तुमैनस: ॥

४. ३. स्नानांग तर्पण

देवतर्पण सव्य पूर्वाभिमुख-

देवतीर्थ से कुश पर से एक एक अंजलि जल गिराएँ-

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ भुवर्देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ स्वर्देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्भुव:स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्।

ऋषितर्पण सव्य उत्तराभिमुख:

प्रजापति तीर्थ से कुश पर से दो-दो अंजुलि जल गिराएँ-

ॐ सनकादिद्वैपायनादय: ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐभूर्भुव:स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् ।

पितृतर्पण अपसव्य दक्षिणाभिमुख-
पितृ तीर्थ से कुश पर से तीन तीन अंजलि जल गिराएँ-

ॐ कव्यनलादय: पितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भू: पितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भुव: पितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ स्व: पितरस्तृप्यन्ताम् । ॐ भूर्भुव: स्व: पितरस्तृप्यन्ताम् ।

तब हाथ में तिल और जल लेकर निम्न मन्त्र से यक्ष्म तर्पण करें। मन्त्र बोल कर तीर्थ तट की ओर जल गिरा दें।

ॐ यन्मया दूषितं तोयं शारीरमलसम्भवात् ।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥

तब अपने शिखा को दाहिने हाथ से शरीर के दाहिने ओर में निष्पीडन करें-

ॐ लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिता: ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टै: शिखोदकै: ॥

अन्त में तीर्थ का विसर्जन कर के स्नानादि कर के वस्त्र धारण करके पुनः सव्य पूजन के स्थान पर आवें।

५. यज्ञोपवीत धारण

अब यज्ञोपवीत को निम्न मन्त्र द्वारा त्रिगुणी करें:

इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषि: विष्णुर्देवता गायत्रीछन्द: सूत्रत्रिगुणी करणे विनियोग:।

ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ॥

तब यज्ञोपवीत को प्रक्षालन करें-

आापोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषि: आपो देवता गायत्री छन्द: यज्ञो पवीत प्रक्षालने विनियोग:।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्थान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ॥ तस्मा अरंगमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ । आपोजनयथाचनः ॥

अब देवताओं को यज्ञोपवीत में आह्वान करें-

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषि: परमात्मा देवता गायत्री छन्द: प्रथमतन्तौ ॐ कारावाहने विनियोग:।

ॐ प्रथमतन्तौ ॐ काराय नम: ॐ कारमावाहयामि।।

अग्निदूतमिति मेधातिथिर्ऋषि: अग्निर्देवता गायत्री छन्द: द्वितीयतन्तौ अग्न्यावाहने विनियोग:।

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँऽ३ आसादयादिह ॥

द्वितीयतन्तौ अग्नये नमः अग्निमावाहयामि।।

नमोऽस्तुसर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सर्पा देवताः अनुष्टुप्छन्दः तृतीय तन्तौ सर्पावाहने विनियोगः।
ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।। ।। तृतीयतन्तौ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि।।

वय ँ सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः सोमो देवता गायत्रीछन्दः
चतुर्थतन्तौ सोमावाहने विनियोगः।
ॐ व्वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि ।।
चतुर्थतन्तौ सोमाय नमः सोममावाहयामि।।

उदीरतामित्यस्य शंखऋषिः पितरो देवता त्रिष्टुप्छन्दः पञ्चमतन्तौ पित्रा वाहने विनियोगः।
ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मद्‌ध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुँय्य ईयुरवृकाऽऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरोहवेषु।। पञ्चमतन्तौ पितृभ्यो नमः पितृनावाहयामि।।

प्रजापतेऽत्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः प्रजापतिर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः षष्ठतन्तौ प्रजापत्यावाहने विनियोगः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्॥
षष्ठतन्तौ प्रजापतये नमः प्रजापतिमावाहयामि॥

आनोनियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः अनिलो देवता त्रिष्टुप्छन्दः
सप्तमतन्तौ अनिलावाहने विनियोगः।
ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।
वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः॥
सप्तमतन्तौ अनिलाय नमः अनिलमावाहयामि॥

सुगावेत्यस्यात्रिर्ऋषिः गृहपतयो देवता आर्षी त्रिष्टुप्छन्दः अष्टमतन्तौ
यमावाहने विनियोगः।
ॐ सुगावोदेवाः सदना अकर्मय आजग्मेद ँ सवनञ्जुषाणाः।
भरमाणाव्वहमानाहवी ँ ष्यस्मेधत्तव्वसवोव्वसूनि स्वाहा॥
अष्टमतन्तौ यमाय नमः यममावाहयामि॥

विश्वेदेवास आगत इत्यस्य मधुच्छन्दा ऋषिः विश्वेदेवा देवताः
त्रिष्टुप्छन्दः नवमतन्तौ विश्वेषां देवानामावाहने विनियोगः।
ॐ विश्वेदेवास ऽ आगतशृणुताम ऽ इम ँ हवम्। एदम्बर्हिर्निर्षीदत॥
नवमतन्तौ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वान्देवानावाहयामि॥

अब ३ ग्रन्थियों के लिए त्रिदेव का आवाहन करें-

ब्रह्मयज्ञानमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ब्रह्म देवता गायत्री छन्दः ग्रन्थिमध्ये ब्रह्मावाहने विनियोगः।
ॐ ब्रह्म यज्ञानंप्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः।
सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसश्च विवः।।
ग्रन्थिमध्ये ब्रह्माणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि।।

इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः ग्रन्थिमध्ये विष्ण्वावाहने विनियोगः।
ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ।।
ग्रन्थिमध्ये विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि।।

त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः रुद्रो देवता विराट् ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः ग्रन्थिमध्ये रुद्रावाहने विनियोगः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।
ग्रन्थिमध्ये रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि।।

सब का आवाहन कर के, ध्यान करें और सोलह उपचार से पूजन करें-

ॐ प्रजापतेर्यत्सहजं पवित्रं कार्पास सूत्रोद्भव ब्रह्मसूत्रम्।
ब्रह्मत्वसिद्ध्यै च यशः प्रकाशं जपस्य सिद्धिं कुरु ब्रह्मसूत्रम्॥

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसादेवयन्तः॥
प्रणवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाक्षतं समर्पयामि।

तब हाथ में जल लेकर यज्ञोपवीत धारण का विनियोग करें-

ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः, लिङ्गोक्ता देवताः,
त्रिष्टुप् छन्दः, यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः।

निम्म्लिखित मन्त्रसे जनेऊ पहने-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥

जीर्ण यज्ञोपवीतका त्याग-

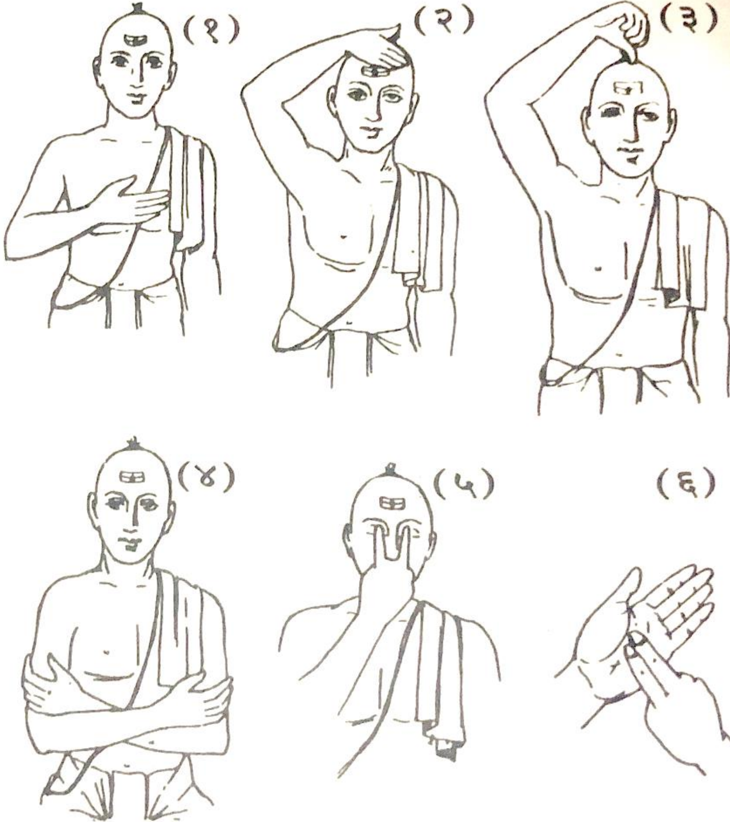
इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढकर पुराने जनेऊको कण्ठी जैसा बना कर सिरपरसे पीठकी ओर निकालकर उसे जलमें प्रवाहित कर दे-

ॐ एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम्॥

६. गायत्रीपूजन

वेदमाता गायत्री देवी के पूजन से पहिले षडंगन्यास करें:

ॐ हृदयाय नमः, ॐ भूः शिरसे स्वाहा, ॐ भुवः शिखायै वषट्, ॐ स्वः कवचाय हुं, ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राय वौषट्, ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।



काल के अनुसार वेदमाता गायत्री का ध्यान करें।

प्रात:-

ॐ बालां विद्यां तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्।
रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा॥
कमण्डलुधरां देवी हंसवाहनसंस्थिताम्।
ब्रह्माणी ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्॥
मन्त्रेनावाहयेद्देवीमायान्ती सूर्यमण्डलात्।

मध्याह्न-

ॐ वृद्धां सरस्वतीं कृष्णां पीतवस्त्रां चतुर्भुजाम्।
शङ्खचक्रगदापद्म हस्तां गरुडवाहिनीम्॥
वैष्णवीं विष्णुदैवत्यां विष्णुलोकनिवासिनीम्।
आवाहयाम्यहं देवी मायान्तीं विष्णुमण्डलात्॥
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे विष्णुवादिनि।
सरस्वति छन्दसा मातर्विष्णुयोनि नमोऽस्तुते॥

आचमन विनियोगः

ॐ आपः पुनन्त्विति मन्त्रस्य नारायण ऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः अम्बुप्राशने विनियोगः॥

मन्त्र-

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवीपूता पुनातु माम्।
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्।

यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वादुश्चरितं मम।
सर्वां पुनन्तु मामापो सताञ्च प्रतिग्रह ँ स्वाहा॥

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्॥

सायं-

ॐ सावित्रीं युवतीं शुक्लां शुक्लवस्त्रां त्रिलोचनाम्।
त्रिशूलिनीं वृषारूढां रुद्ररूपिणीसंस्थिताम्॥
रुद्राणीं रुद्रदैवत्यां रुद्रलोकानिवासिनीम्।
आवाहयाम्यहं देवी मायान्तीं रुद्रमण्डलात्॥
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे रुद्रवादिनि।
सावित्रि छन्दसां मातर्रुद्रयोनि नमोऽस्तुते॥

आचमन विनियोगः

ॐ अग्निश्चमेत्यस्य नारायणः ऋषिः अग्निर्देवता अनुष्टुब्छन्दः अम्बुप्राशने विनियोगः॥

आचमन-

ॐ अग्निश्चमा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्नाअहस्तदवलुम्प तु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥

आवाहन-

ॐ तेजोऽसीति धामनामासीत्यस्य च परमेष्ठी प्रजापतिऋषिर्यजुस्त्रिष्टुबुष्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोगः ।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धामनामासि प्रियं देवानामना धृष्टं देव यजनमसि ।

गायत्रीदेवीका उपस्थान (प्रणाम) -

आवाहन करने पर गायत्री देवी आगयी है, ऐसा मानकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर आगेके मन्त्रसे उनको प्रणाम करें-

ॐ गायत्र्यसीति विवस्वान् ऋषिः स्वराण्महापङ्क्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि । न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत् ।

तदुपरान्त सर्वोपचार पूजा करें।

६.१. गायत्री शाप विमोचन-

ब्रह्मा, वसिष्ठ, विश्वामित्र और शुक्रके द्वारा गायत्रीमन्त्र शप्त है। अतः शाप-निवृत्तिके लिये शाप-विमोचन करना चाहिये।

शाप मुक्ता हि गायत्री चतुर्वर्ग फल प्रदा।
अशाप मुक्ता गायत्री चतुर्वर्ग फलान्तका॥

ब्रह्मशापविमोचन-

ॐ अस्य श्री ब्रह्मशाप विमोचन मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्भुक्ति मुक्तिप्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्म शापविमोचनार्थे जपे विनियोगः।

ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः।
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसो वाचमग्रतः॥
ॐ वेदान्त नाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि।
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।
ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्मशापद्विमुक्ता भव।

वसिष्ठशापविमोचन-

ॐ अस्य श्री वसिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रह कर्ता वसिष्ठ ऋषिर्वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवागायत्री छन्दः वसिष्ठ शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरहं शिवः।
आत्म ज्योतिरहं शुक्रः सर्व ज्योतिरसोऽस्म्यहम्॥

(इति युक्त्व योनि मुद्रां प्रदर्श्य गायत्री त्रयं पठित्व)

ॐ देवी गायत्रि त्वं वसिष्ठ शापाद्विमुक्ता भव।

विश्वामित्रशापविमोचन-

ॐ अस्य श्री विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टि कर्ता विश्वा मित्र ऋषिर्विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्रीछन्दः विश्वामित्र शाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

ॐ गायत्री भजाम्यग्नि मुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवाः।
देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये ॥
ॐ देवी गायत्रि त्वं विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव।

शुक्रशापविमोचन-

ॐ अस्य श्रीशुक्रशापविमोचन मन्त्रस्य श्री शुक्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः देवी गायत्री देवता शुक्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः।

ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः।
आत्म ज्योतिरहं शुक्रः सर्व ज्योतिरसोऽस्म्यहम् ॥
ॐ देवी गायत्रि त्वं शुक्र शापाद्विमुक्ता भव।

प्रार्थना-

ॐ अहो देवि महादेवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ॥

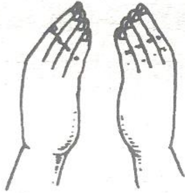
ॐ देवि गायत्रि त्वं ब्रह्म शापाद्विमुक्ता भव, वसिष्ट शापाद्विमुक्ता भव, विश्वामित्र शापाद्विमुक्ता भव, शुक्र शापाद्विमुक्ता भव।

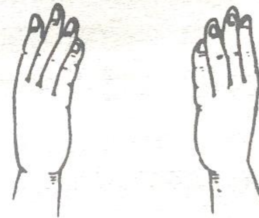
जप के पूर्व की २४ मुद्राएँ-

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पंचमुखं तथा॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकांजलिकं तथा।
शकटंयमपाशं च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकं चैवमत्स्यः कूर्मोवराहकम्।
सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा।
एतामुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः।


(१) सुमुखम्


(२) सम्पुटम्


(३) विततम्

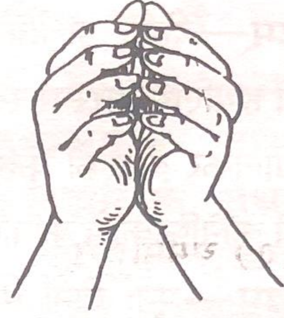

(४) विस्तृतम्


(५) द्विमुखम्

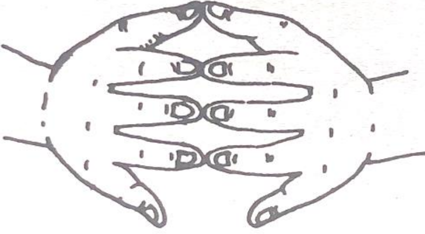

(६) त्रिमुखम्



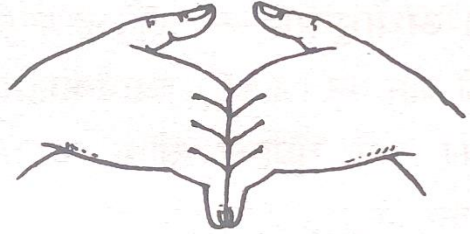
(७) चतुर्मुखम्



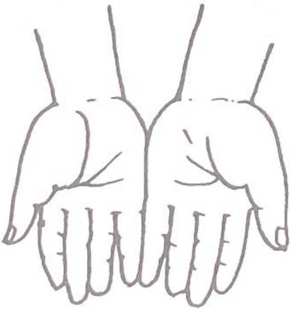
(८) पञ्चमुखम्



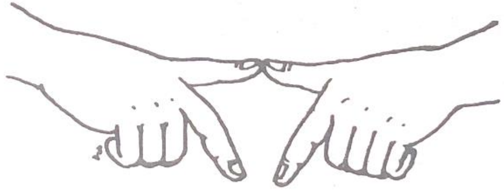
(९) षण्मुखम्



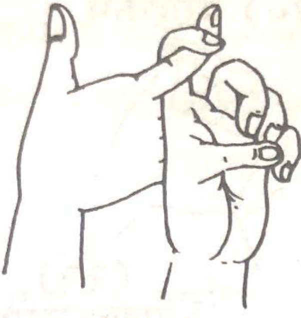
(१०) अधोमुखम्



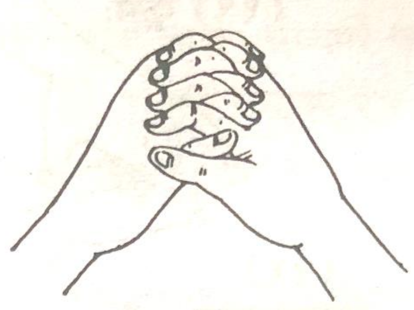
(११) व्यापकाञ्जलिम्



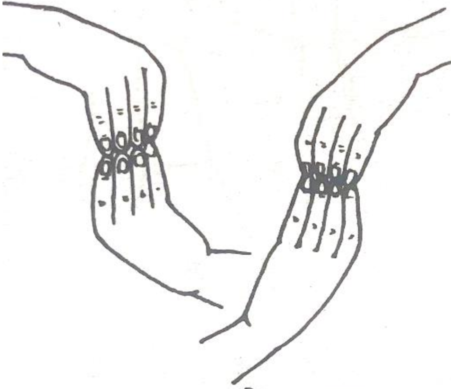
(१२) शकटम्



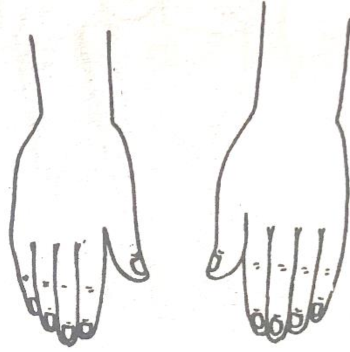
(१३) यमपाशम्



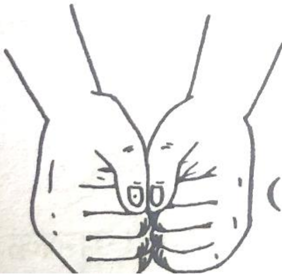
(१४) ग्रथितम्



(१५) उन्मुखोन्मुखम्



(१६) प्रलम्बम्



(१७) मुष्टिकम्



(१८) मत्स्यः



(१९) कूर्मः



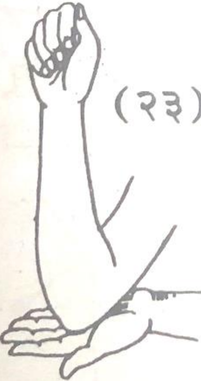
(२०) वराहकम्



(२१) सिंहाक्रान्तम्



(२२) महाक्रान्तम्



(२३) मुद्गरम्



(२४) पल्लवम्

गायत्री मन्त्र का विनियोग-

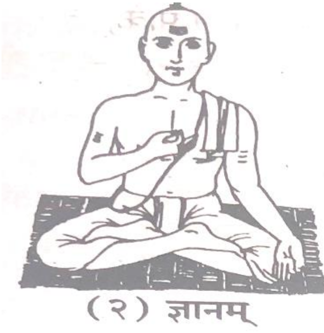
ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता, ॐ भूर्भुवःस्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्नि वायुसूर्या देवताः, ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

मन्त्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।

जप के बाद के ८ मुद्राएँ-

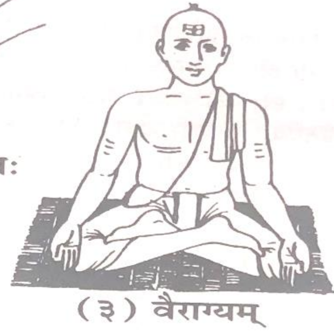
सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिर्शंखोऽथपंकजम्।
लिंगनिर्वाणमुद्राश्च जपान्तेऽष्टौप्रदर्शयेत्।।



(२) ज्ञानम्



(१) सुरभिः



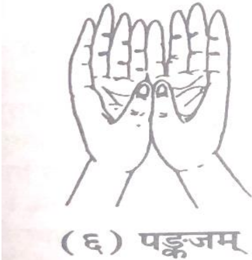
(३) वैराग्यम्



(४) योनिः



(५) शंखः



(६) पङ्कजम्



(७) लिङ्गम्



(८) निर्वाणम्

गायत्री जप का अर्पण-

अनेन गायत्री जप कर्मणा सर्वान्तर्यामी भगवान् नारायणः प्रीयतां न मम।

प्रार्थना-

ॐ स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयान्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

६. २. गायत्री कवच

ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायित्री छन्दो, गायत्री देवता, ॐ भूः बीजम् भुवः शक्ति, स्वः कीलकं गायत्री प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यानम्-

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटि समप्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटि सुशीतलाम्॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहार विराजिताम्।
वराभयांकुशकशा हेमपात्राक्ष मालिकाम्॥
शंखचक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं वराम्।
सितपंकज संस्थां च हंसारुढ़ां सुखस्मिताम्।
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्री कवचं जपेत्॥

ॐ ब्रह्मोवाच

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचं श्रृणु।
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रलोक्यं वशयेत्क्षणात्॥
सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी॥
ललाटं ब्रह्म दैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी।
कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बके॥
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ।
द्विजान्यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती॥
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चंद्रहासिनी।

चिबुकं वेदगर्भा चकण्ठं पात्वघनाशिनी ॥
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवाहिनी ।
उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया ॥
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ।
पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु ॥
ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु ।
जंघयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्म शीर्षका ॥
सूर्या पद द्वयं पातु चन्द्रा पादांगुलीषु च ।
सर्वाङ्गं वेद जननी पातु मे सर्वदाऽनघा ॥
इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम् ।
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्व रोग निवारणम् ॥
त्रिसंध्यं यः पठेद्विद्वान्सर्वान् कामान वाप्नुयात् ।
सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः ॥
सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् ।
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान् ॥

७. सप्तर्षिपूजन

पूजास्थल पर आकर पुन: आचमन कर के शान्त्यध्याय का पाठ करें-

ॐ ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ॥ १॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु । शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः॥२॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ ३॥ कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ४॥ कस्त्वा सत्यो मदानाम्म ँ हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ ५॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥ कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्यऽ आ भर॥ ७॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नोऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ८॥ शं नो मित्रं शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा। शं नऽइन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥ ९॥ शं नो वातः पवता ँ शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभि वर्षतु॥ १०॥ अहानिशं भवन्तु नः श ँ रात्रीः प्रति धीयताम्। शं नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या। शं नऽइन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः॥ ११॥ शं नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥ १२॥ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ १३॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नऽऊर्जे दधातन। महे

रणाय चक्षसे ॥ १४ ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ १५ ॥ तस्माऽ अरं गमाम वो यस्य क्षमाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ १६ ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥१७॥ दृते दृ ँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृते दृ ँ ह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ अस्त्वर्चिषे । अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्य ँ शिवो भव ॥ २० ॥ नमस्तेऽ अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे । नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥ २१ ॥ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ २२ ॥ सुमित्रिया नऽआपऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ २४ ॥

तब पुन: पंचोपचार से आवाहित देवों की पूजा करें और सप्त ऋषियों का आवाहन करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः गौतमं आवाहयामि स्थापयामि भो गौतम इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भारद्वाजाय नमः भारद्वाजं आवाहयामि स्थापयामि भो भारद्वाज इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नोवरदो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रं आवाहयामि स्थापयामि भो विश्वामित्र इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः जनदग्निं आवाहयामि स्थापयामि भो जमदग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदोभव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः वसिष्ठं आवाहयामि स्थापयामि भो वसिष्ठ इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदोभव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः कश्यपं आवाहयामि स्थापयामि भो कश्यप इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदोभव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः अत्रिं आवाहयामि स्थापयामि भो अत्रि इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः अरुन्धतिं आवाहयामि स्थापयामि भो अरुन्धति इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदोभव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः याज्ञवल्क्याय नमः याज्ञवल्क्यं आवाहयामि स्थापयामि भो याज्ञवल्क्य इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम सम्मुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ॥

ध्यान-

ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षन्ति सदमप्रमादम्।
सप्तापः स्वपतोलोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौचवेदौ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहिता गौतमभारद्वाज विश्वामित्रजमदग्नि वसिष्ठ काश्यपात्रेयभ्यो नमः ध्यानार्थे पुष्पाक्षतं समर्पयामि।

प्रतिष्ठा-

ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहित सप्तर्षिभ्यो नमः प्रतिष्ठापूर्वकः आसनं समर्पयामि।

तब सर्वोपचार पूजन करें तदनन्तर समर्पण-

अनेन मया वेदोत्सर्जनांगत्वेन कृतेन ध्यानावाहनादि षोडशोपचारादि पूजनेन अरुन्धतीयाज्ञवल्क्यसहित सप्तर्षयः प्रीयन्तां न मम ॥

८. सूक्तत्रय

८.१. पुरुष सूक्त

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमि ँ सर्वत स्पृत्वात्त्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ पुरुष एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ तं य्यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः । ऊरूतदस्य यद्वैश्य: पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत ॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो

द्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँऽ२ अकल्पयन् ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन् पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

८. २. श्री सूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां

करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम् । सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

८. ३. रुद्र सूक्त

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हि ँ सीः पुरुषञ्जगत्॥ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाऽच्छाव्वदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना असत्॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥ असौ यस्ताम्रो

अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैन ँ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ँ हेड ईमहे ॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनङ्गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप ॥ विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत । अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥ अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्ब्भकम्मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

९. वंशानां ब्रुवणं

अब समस्त ऋषियों के वंशों का स्मरण और उत्तर दिशा में तर्पण इन ११ मन्त्रों से करें:

ॐ अथर्व ँ शःसमानमासाञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रो माण्डूकायनेर्माण्डूकायनिर्माण्डव्यान्माण्डव्यः कौत्सात्कौत्सो माहित्थेर्माहित्थिर्व्वामकक्षायणाद्वामकक्षायणो वात्स्याद्वात्स्यः शाण्डिल्याच्छाण्डिल्यः कुश्रेःकुश्रिर्यज्ञवचसो राजस्तम्बायनाद्यज्ञ वचाराजस्तम्बायनस्तु रात्कावषेयात्तुरः कावषेयः प्रजापतेः प्रजापतिर्ब्रह्मणो ब्रह्मस्वयम्भुब्रह्मणे नमः ।१। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अथर्व ँ शस्तदिदंव्वय ँ शैर्पणाय्याच्छैर्पणाय्यो गौतमाद्गौतमोव्वात्स्याद्वात्स्यो वात्स्याच्च पराशर्य्याच्चपराशर्य्यः सांकृत्याच्चभारद्वाजाच्च भारद्वाजऽऔदवाहेश्च शाण्डिल्याच्चशाण्डिल्यो वैजवापाच्च गौतमाच्चगौतमो वैजवापायनाच्च वैष्ठपुरेयाच्चवैष्ठपुरेयः शाण्डिल्याच्चरौहिणायनाच्चरौहिणायनः शौनकाच्चात्रेयाच्चरैभ्याच्चरैभ्यः पौतिमाख्यायणाच्च

कौण्डिन्यायनाच्चकौण्डिन्यायनः कौण्डिन्यात्कौण्डिन्यः कौण्डिन्यात्कौण्डिन्यः कौण्डिन्याच्चाग्निवेश्याच्च।२। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अग्निवेश्यः सैतवात्सैतवः पाराशर्यात्पाराशर्यो जातुकर्ण्याज्जातुकर्ण्यो भारद्वाजात्भारद्वाजो भारद्वाजाच्चासुरायणाच्च गैतमाच्चगौतमो भारद्वाजाद्भारद्वाजो वैजवापायनाद्वैजवापायनः कौशिकायनेः कौशिकायनिर्धृत कौशिकाद्धृतकौशिकः पाराशर्यायणात्पाराशर्यायणः पाराशर्यात्पाराशर्य्यो जातुकर्ण्याज्जातुकर्ण्यो भारद्वाजात्भारद्वाजो भारद्वाजाच्चासुरायणाच्च यास्काच्चासुरायणस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धने रौपजन्धनिरासुरेरासुरिर्भारद्वाजाद्भारद्वाजऽआत्रेयात्।३।

ॐ आत्रेयोमाण्टेर्माण्टिर्गौतमाद्गौतमो गौतमाद्गौतमो वात्स्याद्वात्स्यः शाण्डिल्याच्छाण्डिल्यः कैशोर्यात्काप्यात्कैशोर्यः काप्यः कुमारहारितात्कुमारहारितो गालवाद्गालवो विदर्भीकौण्डिन्याद्विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सनपातो बाभ्रवाद्वत्सनपाद्बाभ्रवः पथः सौभरात्पन्थाः सौभरो यास्यादांगिरसादयास्यऽआङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाष्ट्रादाभूतिस्त्वाष्ट्रो

व्विश्वरूपात्वाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्ट्रोश्विभ्यामश्विनौ दधीचाथर्वणाद्दध्यंगार्थव्वणो दैवादथर्वाद्दैवोमृत्यो: प्राध्व ँ सनान्मृत्यु: प्राध्व ँ सनात्प्राध्व ँ सनऽएकर्षेरेकर्षिर्व्विप्रजितेर्विप्रजितिर्व्यष्टेर्व्यष्टि: सनारो: सनारु: सनातनात्सनातन: सनगात्सनग: परमेष्ठिन: परमेष्ठी ब्रह्मणोब्रह्मस्वयम्भुब्रह्मणेनम:।४। वंशोक्ता: ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अथव्व ँ शस्तदिदंवय ँ शौर्पणाय्याच्छौर्पणाय्यो गौतमाद्गौतमो वात्स्याद्वात्स्यो वात्स्याच्च पाराशर्य्याच्च पाराशर्य्य: साङ्कृत्याच्च भारद्वाजाच्चभारद्वाजऽऔदवाहेश्च्च शाण्डिल्याच्चशाण्डिल्यो वैजवापाच्च गौतमाच्चगौतमो वैजवापायनाच्च व्यैष्ठपुरेयाच्चव्वैष्ठपुरेय: शाण्डिल्याच्च रौहिणायनाच्चरौहिणायन: शौनकाच्चजैवन्तायनाच्च रैभ्याच्चरैभ्य: पौतिमाख्यायणाच्च कोण्डिन्यायनाच्च कौण्डिन्यायन: कौण्डिन्याभांकौण्डिन्याऽऔर्णवाभेभ्यऽऔर्णवाभा: कौण्डिन्यात्कौण्डिन्य: कौण्डिन्यात्कौण्डिन्य: कौण्डिन्याच्चाग्निवेश्याच्च।५। वंशोक्ता: ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अग्निवेश्य: सैतवात्सैतव: पाराशर्यात्पाराशर्यो जातुकर्ण्याज्जातुकर्ण्यो भारद्वाजात्भारद्वाजो

भारद्वाजाच्चासुरायणाच्च गैतमाच्चगौतमो भारद्वाजाद्भारद्वाजो बलाकाकौशिकाद्बलाकाकौशिक: काषायणात्काषायण: सौकरायणात्सौकरायणिस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धने रौपजन्धनि: सायकायनात्सायकायन: कौशिकायने: कौशिकायनिर्धृत कौशिकाद्धृतकौशिक: पाराशर्यायणात्पाराशर्यायण: पाराशर्यात्पाराशर्य्यो जातुकर्ण्याज्जातुकर्ण्यो भारद्वाजात्भारद्वाजो भारद्वाजाच्चासुरायणाच्च
यास्काच्चासुरायणस्त्रैवणेस्त्रैवणिरौपजन्धने
रौपजन्धनिरासुरेरासुरिर्भारद्वाजाद्भारद्वाजऽआत्रेयात्‌।६। वंशोक्ता: ऋषयस्तृप्यन्ताम्‌।

ॐ आत्रेयोमाण्टेर्माण्टिर्गौतमाद्गौतमो गौतमाद्गौतमो वात्स्याद्वात्स्य: शाण्डिल्याच्छाण्डिल्य: कैशोर्यात्काप्यात्कैशोर्य: काप्य: कुमारहारितात्कुमारहारितो गालवाद्गालवो विदर्भीकौण्डिन्याद्विदर्भीकौण्डिन्यो वत्सनपातो बाभ्रवाद्वत्सनपाद्बाभ्रव: पथ: सौभरात्पन्था: सौभरोयास्यादांगिरसादयास्यऽआङ्गिरसऽआभूतेस्त्वाष्ट्रादाभूति स्त्वाष्ट्रो व्विश्वरूपात्वाष्ट्राद्विश्वरूपस्त्वाष्ट्रोश्विभ्यामश्विनौ दधीचाथर्वणाद्दध्यंगार्थव्वणो दैवादथर्वाद्दैवोमृत्यो: प्राध्व ँ सनान्मृत्यु: प्राध्व ँ सनात्प्राध्व ँ

सनऽएकर्षेरेकर्षिर्व्विप्रजितेर्विप्रजितिर्व्यष्टेर्व्यष्टिः सनारोः सनारुः सनातनात्सनातनः सनगात्सनगः परमेष्ठिनः परमेष्ठी ब्रह्मणोब्रह्मस्वयम्भुब्रह्मणेनमः।७। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ अथर्व्व ँ शस्तदिदंवयः भारद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रो गार्गीपुत्राद्गार्गीपुत्रो गार्गीपुत्राद्गार्गी पुत्रो वाडेयीपुत्राद्वाडेयी पुत्रो मौषिकी पुत्रान्मौषिकी पुत्रो हारिकर्णी पुत्राद्धारिकर्णी पुत्रो भारद्वाजी पुत्राद्भारद्वाजी पुत्रः पैङ्गी पुत्रात्पैङ्गी पुत्रः शौनकापुत्राच्छौनकी पुत्रः।८। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ काश्यपी बालाक्यामाठरी पुत्रात्काश्यपी बालाक्यामाठरीपुत्रः कौत्सीपुत्रात्कौत्सीपुत्रो बौधी पुत्राद्बौधीपुत्रः शालंकायनी पुत्राच्छालंकायनीपुत्रो वार्षगणी पुत्राद्वार्षगणीपुत्रो गौतमी पुत्राद्गौतमीपुत्रऽआत्रेयी पुत्रादात्रेयीपुत्रो गौतमीपुत्राद्गौतमीपुत्रो व्वात्सी पुत्राद्वात्सी पुत्रो व्वात्सी पुत्राद्वात्सी पुत्रो भारद्वाजीपुत्राद्भारद्वाजीपुत्रः पाराशरी पुत्रात्पाराशरी पुत्रो वार्क्कारुणी पुत्राद्वार्क्कारुणी पुत्रऽआर्तभागीपु त्रादार्तभागीपुत्रः शौंगीपुत्राच्छौंगीपुत्रः सांकृतीपुत्रात्सांकृती पुत्रः।९। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ आलम्बी पुत्रादालम्बी पुत्रऽआलम्बायनी पुत्रादालम्बायनी पुत्रो जायन्ती पुत्राज्जायन्तीपुत्रो माण्डूकायनी पुत्रान्माण्डूकायनीपुत्रो माण्डूकी पुत्रान्माण्डूकी पुत्रः शाण्डिली पुत्राच्छाण्डिली पुत्रो राथीतरी पुत्राद्राथीतरी पुत्रः क्रौञ्चिकी पुत्राभ्यांक्रौञ्चिकी पुत्रौ वैदभृती पुत्राद्वैदभृती पुत्रो भालुकी पुत्राद्भालुकी पुत्रः प्राचीनयोगी पुत्रात्प्राचीनयोगी पुत्रः साञ्जीवी पुत्रात्साञ्जीवी पुत्रः कार्शकेयी पुत्रात्कार्शकेयी पुत्रः।१०। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

ॐ प्राश्नी पुत्रादासुरिवासिनः प्राश्नी पुत्र आसुरायणादासुरयण आसुरेरासुरिर्य्याज्ञवल्क्याद्याज्ञवल्क्य उद्दालकादुद्दालकोरुणादरुण उपवेशेरुपवेशिः कुश्रेः कुश्रिर्व्वाजिश्रवसो व्वाजश्रवाजिह्वावतोबाध्योगाज्जिह्वावान् वाध्योगोसिताद्वार्षगणादसितो व्वार्षगणोहरितात्कश्यपाद्धरितः कश्यपः शिल्पात्कश्यपाच्छिल्पः कश्यपः कश्यापान्नैध्रुवेः कश्यपोन्नैध्रुविर्व्वाचो वागम्भिण्याऽअम्भिण्यादित्यातादित्यानीमानिशुक्लानि यजू ँ पिवाजसनेयेनयाज्ञवल्क्ये नाख्यायन्ते ।११। वंशोक्ताः ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

१०. वेदाध्ययन

ऋषियों के वंशों कि वन्दना के बाद इन वेड मन्त्रों का उच्चारण करें:

इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशंसो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

कृष्णोऽस्याखरेष्ठो ऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां प्रोक्षामि। बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि॥

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन॥

एदम् अगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासो ऽ अजुषन्त विश्वे। ऋक् सामाभ्या संतरन्तो यजुर्भी रायस् पोषेण सम् इषा मदेम। इमा ऽ आपः शमु मे सन्तु देवीः। ओषधे त्रायस्व। स्वधिते मैन ँ हि ँ सीः॥

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिऽतिथेरातिथ्यमसि विष्णवे श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाऽग्नयेत्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । आ ददे नार्यसि । इदम् अह ँ रक्षसां ग्रीवा ऽ अपि कृन्तामि । यवो ऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः । दिवेऽत्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा । शुन्धन्तां लोकाः पितृषदनाः । पितृषदनमसि ॥

वाचस्पतये पवस्व वृष्णो अ ँ शुभ्यां गभस्तिपूतः । देवो देवेभ्यः पवस्व येषां भागो ऽसि ॥

उपयामगृहीतो ऽसि । आदित्येभ्यस्त्वा । विष्ण ऽ उरुगायैष ते सोमस्त ँ रक्षस्व मा त्वा दभन् ॥

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर् वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चितानाः । याभिर्मित्रावरुणा वभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्र मनयन्नत्यरातीः ॥

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविता धियम् । अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या ऽ अध्याभरत् ॥

दृशानो रुक्म ऽ उर्व्या व्यद्यौद् दुर्मर्षमायु: श्रिये रुचान:। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेता:॥

मयि गृह्णाम्यग्रे ऽ अग्नि ँ रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । मामु देवताः सचन्ताम् ॥

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया। उख्यस्य केतुं प्रथमं जुषाणा। अश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा ॥

अग्ने जातान्प्रणुद नः सपत्नान्प्रत्यजातान्नुद जातवेदः । अधि नो ब्रूहि सुमना ऽ अहेड ँ स्तव स्याम शर्म ँ स्त्रिवरूथ ऽ उद्भौ ॥

नमस्ते रुद्र मन्यव ऽ उतो त ऽ इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाणाम् ऽ अद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो ऽधि सम्भृतं पयः। तां न ऽ इषमूर्जं धत्त मरुतः स ँ रराणाः। ऽ अश्म ँ स्ते क्षुत्। मयि त ऊर्क्। यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मेज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृताममृतेन। मधुमतीं मधुमता सृजामि स ँ सोमेन। सोमो सि। अश्विभ्यां पच्यस्व। सरस्वत्यैपच्यस्व। इन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व॥

क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मा त्वा हि ँ सीन्मा मा हि ँ सीः॥

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्वस्युराचके॥

तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पा ऽ आयुर्मे पाहि। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आ ददे॥
हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽ आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव ऽ आग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वोःसौमपौष्णः श्यामो नाभ्या ँ सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्यः श्वेतः पुच्छ ऽ इन्द्रायस्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामनः॥

शादं दद्भिरवकां दन्तमूलैर्मृदं बर्स्वैस्तेगान्द ँ ष्ट्राभ्या ँ सरस्वत्या ऽ अग्रजिह्वं जिह्वाया ऽ उत्सादमवक्रन्देन तालु वाज ँ हनुभ्यामप ऽ आस्येन वृषणमाण्डाभ्यामादित्या ँ श्मश्रुभिः पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्या ँ शुक्लाय स्वाहाकृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माण्यवार्या ऽ इक्षवो वार्याणि पक्ष्माणि पार्या ऽ इक्षवः॥

अग्निश्च पृथिवी च संनते ते मे सं नमतामदः। वायुश्चाऽन्तरिक्षं च संनते ते मे सं नमतामदः। ऽ आदित्यश्च द्यौश्च संनते ते मेसं नमतामदः। ऽ आपश्च वरुणश्च संनते ते मे सं नमतामदः। सप्त स ँ सदो ऽ अष्टमी भूतसाधनी। सकामा ँ ऽ अध्वनस्कुरुसंज्ञानमस्तु मे ऽमुना॥

समास्त्वाग्न ऽ ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऽ ऋषयो यानि सत्या। सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा ऽ आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः॥

होता यक्षद्समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या ऽ अधि । दिवो वर्ष्मन्त्समिध्यत ऽ ओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतर्यज ॥

समिद्धो ऽ अञ्जन्कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत्पिन्वमानः । वाजी वहन्वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् ॥

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतुपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु ॥

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता ऽ आपः स प्रजापतिः ॥

अस्याजरासो दमामरित्रा ऽ अर्चद्धूमासो ऽ अग्नयः पावकाः । श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः ॥
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

अपेतो यन्तु पणयो ऽसुम्ना देवपीयवः । अस्य लोकः सुतावतः । द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ॥

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आ ददे नारिरसि ॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आ ददे ऽदित्यै रास्नासि ॥

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहा। अग्नये स्वाहा। अन्तरिक्षे स्वाहा। वायवे स्वाहा। दिवे स्वाहा। सूर्याय स्वाहा ॥

ईशा वास्यमिद ँ सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥

११. शतपथ ब्राह्मण पाठ

वेदमन्त्रों को पाठ करने के बाद निम्न मन्त्रों का यथा शक्ति भी पाठ करें:

व्रतमुपैष्यन्। अन्तरेणाहवनीयं च गार्हपत्यं च प्राङ्तिष्ठन्नप उपस्पृशति तद्यदप उपस्पृशत्यमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतोमेध्या वा

आपो मेध्यो भूत्वा व्रतमुपायानीति पवित्रं वा आपः पवित्रपूतो व्रतमुपायानीति तस्माद्वा अप उपस्पृशति ॥

स वै कपालान्येवान्यतर उपदधाति । दृषदुपले अन्यतरस्तद्वा एतदुभयं सह क्रियते तद्यदेतदुभयं सह क्रियते ॥

स वै स्रुचः सम्मार्ष्टि । तद्यत्स्रुचः सम्मार्ष्टि यथा वै देवानां चरणं तद्वा अनु मनुष्याणां तस्माद्यदा मनुष्याणां परिवेषणमुपक्लृप्तं भवति ॥

हिंकृत्यान्वाह । नासामा यज्ञोऽस्तीति वा आहुर्न वा अहिंकृत्य साम गीयते स यद्धिंकरोति तद्धिंकारस्य रूपं क्रियते प्रणवेनैव साम्नोरूपमुपगच्छत्यो३ ंओ३ इत्येतेनो हास्यैष सर्व एव ससामा यज्ञो भवति ॥

स वै प्रवरायाश्रावयति । तद्यत्प्रवरायाश्रावयति यज्ञो वा आश्रावणं यज्ञमभिव्याहृत्याथ होतारं प्रवृणा इति तस्मात्प्रवरायाश्रावयति ॥

ऋतवो ह वै देवेषु यज्ञे भागमीषिरे । आ नो यज्ञे भजत मा नो यज्ञादन्तर्गतास्त्वेव नोऽपि यज्ञे भाग इति ॥

स वै पर्णशाखया वत्सानपाकरोति । तद्यत्पर्णशाखया वत्सानपाकरोति यत्र वै गायत्री सोममच्छापतत्तदस्या आहरन्त्या अपादस्ताभ्यायत्यपर्णं प्रचिच्छेद गायत्र्यै वा सोमस्य वा राज्ञस्तत्पतित्वा पर्णोऽभवत्तस्मात्पर्णो नाम तद्यदेवात्र सोमस्य न्यक्तं तदिहाप्यसदितितस्मात्पर्णशाखया वत्सानपाकरोति ॥

मनवे ह वै प्रातः । अवनेग्यमुदकमाजह्रुर्यथेदम्पाणिभ्यामवनेजनायाहरन्त्येवं तस्यावनेनिजानस्य मत्स्यः पाणी आपेदे॥

स यत्राह । इषिता दैव्या होतारो भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकायेति यदतो
होतान्वाह सूक्त इव तदाह यजमानायैवैतदाशिषमाशास्ते तद्वा एतदुपरिष्टाद्य जस्याशिषमाशास्ते द्वयंतद्यस्मादुपरिष्टाद्यज्ञस्याशिषमाशास्ते ॥

स यद्वा इतश्चेतश्च सम्भरति । तत्सम्भाराणां सम्भारत्वं यत्रयत्राग्नेर्न्यक्तं ततस्ततः सम्भरति तद्यशसेव त्वदेवैनमेतत्समर्धयति पशुभिरिवत्वन्मिथुनेनेव त्वत्सम्भरन् ॥

उद्धृत्याहवनीयं पूर्णाहुतिं जुहोति । तद्यत्पूर्णाहुतिं जुहोत्यन्नादं वा एतमात्मनो जनयते यदग्निं तस्मा एतदन्नाद्यमपिदधाति यथा कुमारायवाजाताय वत्साय वा स्तनमपिदध्यादेवमस्मा एतदन्नाद्यमपि दधाति ॥

सूर्यो ह वा अग्निहोत्रम् । तद्यदेतस्या अग्र आहुतेरुदैत्तस्मात्सूर्योऽग्निहोत्रम्॥

अथ हुतेऽग्निहोत्र उपतिष्ठते। भूर्भुवः स्वरिति तत्सत्येनैवैतद्वाचं समर्धयति यदाह भूर्भुवः स्वरिति तया समृद्धयाशिषमाशास्ते सुपोषःपोषैरिति तत्पुष्टिमाशास्ते ॥

प्रजापतिर्ह वा इदमग्र एक एवास । स ऐक्षत कथं नु प्रजायेयेति सोऽश्राम्यत्स तपोऽतप्यत स प्रजा असृजत ता अस्य प्रजाः सृष्टाःपराबभूवुस्तानीमानि वयांसि पुरुषो वै प्रजापतेर्नेदिष्ठं द्विपाद्वा अयं पुरुषस्तस्मादिद्विपादो वयांसि।

पित्रामहाहविषा ह वै देवा वृत्रं जघ्नुः । तेनो एव व्यजयन्त येयमेषां विजितिस्तामथ यानेवैषां तस्मिन्त्संग्रामेऽघ्नंस्तान्पितृयज्ञेन समैरयन्त पितरो वैत आसंस्तस्मात्पितृयज्ञो नाम।

देवयजनं जोषयन्ते । स यदेव वर्षिष्ठं स्यात्तज्जोषयेरन्यदन्यद्भूमेराभिशयीतातो वै देवा दिवमुपोदक्रामन्देवान्वा एष उपोत्क्रामति यो दीक्षतेस सदेवे देवयजने यजते स यद्धान्यद्भूमेरभिशयीतावरतर इव हेष्ट्वा स्यात्तस्माद्यदेव वर्षिष्ठं स्यात्तज्जोषयेरन्।

दक्षिणेनाहवनीयं प्राचीनग्रीवे कृष्णाजिने उपस्तृणाति । तयोरेनमधि दीक्षयति यदि द्वे भवतस्तदनयोर्लोकयो रूपं तदेनमनयोर्लोकयोरधिदीक्षयति।

सप्त पदान्यनुनिक्रामति। वृङ्क्त एवैनामेतत्तस्मात्सप्त पदान्यनुनिक्रामति यत्र वै वाचः प्रजातानि छन्दांसि सप्तपदा वै तेषां परार्ध्या शक्करीतामेवैतत्परस्तादर्वाचीं वृङ्क्ते तस्मात्सप्त पदान्यनुनिक्रामति।

शिरो वै यज्ञस्यातिथ्यं बाहू प्रायणीयोदयनीयौ। अभितो वै शिरो बाहू भवतस्तस्मादभित आतिथ्यमेते हविषी भवतःप्रायणीयश्चोदयनीयश्च।

तद्य एष पूर्वार्ध्यो वर्षिष्ठ स्थूणाराजो भवति । तस्मात्प्राङ्प्रक्रामति त्रीन्विक्रमांस्तच्छङ्कुं निहन्ति सोऽन्तःपातः।

उदरमेवास्य सदः । तस्मात्सदसि भक्षयन्ति यद्धीदं किं चाश्नन्त्युदर एवेदं सर्वं प्रतितिष्ठत्यथ यदस्मिन्विश्वे देवा असीदंस्तस्मात्सदो नाम तउ एवास्मिन्नेते ब्राह्मणा विश्वगोत्राः सीदन्त्यैन्द्रं देवतया ।

अभ्रिमादत्ते । देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे नार्यसीति समान एतस्य यजुषो बन्धुर्योषो वा एषायदभ्रिस्तस्मादाह नार्यसीति।

तद्यत्रैतत्प्रवृतो होता होतृषदन उपविशति । तदुपविश्य प्रसौति प्रसूतोऽध्वर्युः स्रुचावादत्ते ।
प्रजापतिर्वै प्रजाः ससृजानो रिरिचान इवामन्यत । तस्मात्पराच्यः प्रजा आसुर्नास्य प्रजाः श्रियेऽन्नाद्याय तस्थिरे ।

प्राणो ह वा अस्योपांशुः । व्यान उपांशुसवन उदान एवान्तर्यामः।
तं सक्तुभिः श्रीणाति । तदेनं मन्थं करोति तेनो एष मन्थ्येतौ ह वा आसाम्प्रजानां चक्षुषी स यद्धैतौ नोदियातां न हैवेह स्वौ चन पाणीनिर्जानीयुः ।

भक्षयित्वा समुपहूताः स्म इत्युक्त्वोत्तिष्ठति । पुरोडाशबृगलमादाय तद्यत्रैतदुपसन्नोऽच्छावाकोऽन्वाह तदस्मैपुरोडाशबृगलम्पाणावादधदाहाच्छावाक वदस्व यत्ते वाद्यमित्यहीयत वा अच्छावाकः।

मनो ह वा अस्य सविता । तस्मात्सावित्रं गृह्णाति प्राणो ह वा अस्य सविता तमेवास्मिन्नेतत्पुरस्तात्प्राणं दधाति यदुपांशु गृह्णातितमेवास्मिन्नेतत्पश्चात्प्राणं दधाति यत्सावित्रं गृह्णाति ताविमा उभयतः प्राणौ हितौ यश्चायमुपरिष्टाद्यश्चाधस्तात् ।

आदित्येन चरुणोदयनीयेन प्रचरति । तद्यदादित्यश्चरुर्भवति यदेवैनामदो देवा अब्रुवंस्तवैव प्रायणीयस्तवोदयनीय इति तमेवास्याएतदुभयत्र भागं करोति।

प्रजापतिर्वा एष यदंशुः । सोऽस्यैष आत्मैवात्मा ह्ययम्प्रजापतिस्तदस्यैतमात्मानं कुर्वन्ति यत्रैतं गृह्णन्ति तस्मिन्नेतान्प्राणान्दधाति यथा यथैतेप्राणा ग्रहा व्याख्यायन्ते स ह सर्वतनूरेव यजमानोऽमुष्मिंलोके सम्भवति।

देवाश्च वा असुराश्च । उभये प्राजापत्याः पस्पृधिरे ततोऽसुरा अतिमानेनैव कस्मिन्नु वयं जुहुयामेति स्वेष्वेवास्येषु जुह्वतश्चेरुस्तेऽतिमानेनैवपराबभूवुस्तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्य हैतन्मुखं यदतिमानः।

अथ स्रुवं चाज्यविलापनीं चादाय । आहवनीयमभ्यैति स एता द्वादशाप्तीर्जुहोति वा
वाचयति वा यदि जुहोति यदि वाचयति समान एव बन्धुः।

अरण्योरग्नी समारोह्य । सेनान्यो गृहान्परेत्याग्नयेऽनीकवतेऽष्टाकपालम्पुरोडाशं निर्वपत्यग्निर्वै देवतानामनीकं सेनाया वै सेनानीरनीकंतस्मादग्नयेऽनीकवत एतद्वा अस्यैकं रत्नं यत्सेनानीस्तस्मा एवैतेन सूयते तं स्वमनपक्रमिणं कुरुते तस्य हिरण्यं दक्षिणाग्नेयो वा एष यज्ञोभवत्यग्ने रेतो हिरण्यं तस्माद्धिरण्यं दक्षिणा।

केशवस्य पुरुषस्य । लोहायसमास्य आविध्यत्यवेष्टा दन्दशूका इति सर्वान्वा एष मृत्यूनतिमुच्यते सर्वान्वधान्यो राजसूयेन यजते तस्य जरैवमृत्युर्भवति तद्यो मृत्युर्यो वधस्तमेवैतदतिनयति यद्दन्दशूकान्।

आग्नेयोऽष्टाकपालः पुरोडाशो भवति । तं पूर्वार्ध आसादयत्यैन्द्र ऽएकादशकपालः पुरोडाशो भवति सौम्यो वा चरुस्तं दक्षिणार्धऽआसादयति वैश्वदेवश्चरुर्भवति तं पश्चार्ध ऽआसादयति मैत्रावरुणी पयस्या भवति तामुत्तरार्ध आसादयति बार्हस्पत्यश्चरुर्भवति तं मध्यआसादयत्येष चरुः पञ्चबिलस्तद्यत्पञ्च हवींषि भवन्ति तेषां पञ्च बिलानि तस्माच्चरुः पञ्चबिलो नाम ।

असद्वा इदमग्र आसीत् । तदाहुः किं तदसदासीदित्यृषयो वाव तेऽग्रेऽसदासीत्तदाहुः के त ऽऋषय इति प्राणा वा ऋषयस्तेयत्पुराऽस्मात्सर्वस्मादिदमिच्छन्तः श्रमेण तपसारिषंस्तस्मादृषयः ।
प्रजापतिरग्निरूपाण्यभ्यध्यायत् । स योऽयं कुमारो रूपाण्यनुप्रविष्ट आसीत्तमन्वैच्छत्सोऽग्निरवेदनु वै मा पिता प्रजापतिरिच्छति हन्ततद्रूपमसानि यन्म एष न वेदेति ।

एतद्वै देवा अब्रुवन् । चेतयध्वमिति चितिमिच्छतेति वाव तदब्रुवंस्तेषां चेतयमानानां सवितैता निसावित्राण्य पश्यद्यत्सविताऽपश्यत्तस्मात्सावित्राणि स एतामष्टा गृहीतामाहुतिमजुहोत्तां हुत्वेमामष्टधाविहिता मषाढामपश्यत्पुरैव सृष्टांसतीम् ।

अथैनमतः खनत्येव । एतद्वा एनं देवा अनुविद्याखनंस्तथैवैनमयमेतदनुविद्य खनति देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यांपृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत्खनामीति सवितृप्रसूत एवैनमेतदेताभिर्देवताभिः पृथिव्या उपस्थादग्निं पशव्यमग्निवत्खनति ।

पर्णकषायनिष्पक्वा एता आपो भवन्ति । स्थेम्ने न्वेव यद्वेव पर्णकषायेण सोमो वै पर्णश्चन्द्रमा उ वै सोम एतदु वा एकमग्निरूपमेतस्यैवाग्निरूपस्योपाप्त्यै ।

भूयांसि हवींषि भवन्ति । अग्निचित्यायां यदु चानग्निचित्यायामतीनि ह कर्माणि सन्ति यान्यन्यत्कर्मीति तान्यतीनि तेषामग्निचित्या राजसूयोवाजपेयोऽश्वमेधस्तद्यत्तान्यन्यानि कर्माण्यति तस्मात्तान्यतीनि ।

रुक्मं प्रतिमुच्य बिभर्ति । सत्यं हैतद्यद्रुक्मः सत्यं वा एतं यन्तुमर्हति सत्येनैतं देवा अबिभरुः सत्येनैवैनमेतद्बिभर्ति ।

वनीवाह्येताग्निं बिभ्रदित्याहुः । देवाश्चासुराश्चोभये प्राजापत्या अस्पर्द्धन्त ते देवाश्चक्रमचरञ्छालमसुरा आसंस्ते देवाश्चक्रेण

चरन्तएतत्कर्मापश्यंश्चक्रेण हि वै देवाश्चरन्त एतत्कर्मापश्यंस्तस्मादनस एव पौरोडाशेषु यजूंष्यनसोऽग्नौ।

गार्हपत्यं चेष्यन्पलाशशाखया व्युदूहति । अवस्यति हैतद्यद्गार्हपत्यं चिनोति य उ वै के चाग्निचितोऽस्यामेवतेऽवसितास्तद्यद्व्युदूहत्यवसितानेव तद्व्युदूहति नेदवसितानध्यवस्यानीति।

अथातो नैर्ऋतीर्हरन्ति। एतद्वै देवा गार्हपत्यं चित्वा समारोहन्नयं वै लोको गार्हपत्य इममेव तं लोकं संस्कृत्य समारोहंस्ते तमएवानतिदृश्यमपश्यन्।

चितो गार्हपत्यो भवति। अचित आहवनीयोऽथ राजानं क्रीणात्ययं वै लोको गार्हपत्यो द्यौराहवनीयोऽथ योऽयं वायुः पवत एष सोम एतंतदिमौ लोकावन्तरेण दधाति तस्मादेष इमौ लोकावन्तरेण पवते।

आत्मन्नग्निं गृह्णीते चेष्यन् । आत्मनो वा एतमधिजनयति यादृशाद्वै जायते तादृङ्ङेव भवति स यदात्मन्नगृहीत्वाग्निं चिनुयान्मनुष्यादेव मनुष्यंजनयेन्मर्त्यान्मर्त्यमनपहतपाप्मनोऽनपहतपाप्मानमथ यदात्मन्नग्निं गृहीत्वा चिनोति तदग्नेरेवाध्यग्निंजनयत्यमृतादमृतमपहतपाप्मनोऽपहतपाप्मानम्।

कूर्ममुपदधाति । रसो वै कूर्मो रसमेवैतदुपदधाति यो वै स एषां लोकानामप्सु प्रविद्धानां पराङ्रसोऽत्यक्षरत्स एष कूर्मस्तमेवैतदुपदधातियावानु वै रसस्तावानात्मा स एष इम एव लोकाः।

प्राणभृत उपदधाति । प्राणा वै प्राणभृतः प्राणानेवैतदुपदधाति ताः प्रथमायां चिता उपदधाति पूर्वार्धे एषोऽग्नेर्यत्प्रथमा चितिःपुरस्तात्तत्प्राणान्दधाति तस्मादिमे पुरस्तात्प्राणाः।

द्वितीयां चितिमुपदधाति । एतद्वै देवाः प्रथमां चितिं चित्वा समारोहन्नयं वै लोकः प्रथमा चितिरिममेव तल्लोकं संस्कृत्य समारोहन्।
तृतीयां चितिमुपदधाति । एतद्वै देवा द्वितीयां चितिं चित्वा समारोहन्यदूर्ध्वम् पृथिव्या अर्वाचीन मन्तरिक्षात्तदेव तत्संस्कृत्य समारोहन्।

चतुर्थीं चितिमुपदधाति । एतद्वै देवास्तृतीयां चितिं चित्वा समारोहन्नन्तरिक्षं वै तृतीया चितिरन्तरिक्षमेव तत्संस्कृत्य समारोहन्।

पञ्चमीं चितिमुपदधाति । एतद्वै देवाश्चतुर्थीं चितिं चित्वा समारोहन्यदूर्ध्वमन्तरिक्षादर्वाचीनं दिवस्तदेव तत्संस्कृत्य समारोहन्।

नाकसद उपदधाति । देवा वै नाकसदोऽत्रैष सर्वोऽग्निः संस्कृतः स एषोऽत्र नाकः स्वर्गो लोकस्तस्मिन्देवा असीदंस्तद्यदेतस्मिन्नाके स्वर्गे लोके देवा असीदंस्तस्माद्देवा नाकसदस्तथैवैतद्यजमानो यदेता उपदधात्ये तस्मिन्नेवैतन्नाके स्वर्गे लोके सीदति।

ऋतव्या उपदधाति । ऋतव एते यदृतव्या ऋतूनेवैतदुपदधाति तदेतत्सर्वं यदृतव्याः संवत्सरो वा ऋतव्याः संवत्सर इदं सर्वमिदमेवैतत्सर्वमुपदधात्यथो प्रजननमेतत्संवत्सरो वा ऋतव्याः संवत्सरः प्रजननं प्रजननमेवैतदुपदधाति।

अथातः शतरुद्रियं जुहोति । अत्रैष सर्वोऽग्निः संस्कृतः स एषोऽत्र रुद्रो देवता तस्मिन्देवा एतदमृतं रूपमुत्तममदधुः स एषोऽत्र दीप्यमानोऽतिष्ठदन्नमिचमान स्तस्माद्देवा अबिभयुर्यद्वै नोऽयं न हिंस्यादिति।

उपवसथीयेऽहन्प्रातरुदित आदित्ये । वाचं विसृजते वाचं विसृज्य पञ्चगृहीतमाज्यंगृह्णीते तत्र पञ्च हिरण्यशकलान्प्रास्यत्यथैतत्त्रयं समासिक्तं भवति दधि मधु घृतं पात्र्यां वा स्थाल्यां वोरुबिल्यां तदुपरिष्टाद्दर्भमुष्टिं निदधाति।

अथातो वैश्वानरं जुहोति। अत्रैष सर्वोऽग्निः संस्कृतः स एषोऽत्र वैश्वानरो देवता तस्मा एतद्धविर्जुहोति तदेनं हविषा देवतां करोति यस्यै वै देवतायै हविर्गृह्यते सा देवता न सा यस्यै न गृह्यते द्वादशकपालो द्वादश मासाः संवत्सरः संवत्सरो वैश्वानरः।

अथातो राष्ट्रभृतो जुहोति। राजानो वै राष्ट्रभृतस्ते हि राष्ट्राणि बिभ्रत्येता ह देवताः सुता एतेन सवेन येनैतत्सोष्यमाणो भवति ता एवैतत्प्रीणाति ता अस्मा इष्टाः प्रीता एतं सवमनुमन्यन्ते ताभिरनुमतः सूयते यस्मै वै राजानो राज्यमनुमन्यन्ते स राजा भवति न स यस्मै न तद्यद्राजानो राष्ट्राणि बिभ्रति राजान उ एते देवास्तस्मादेता राष्ट्रभृतः।

अथातः पयोव्रततायै । पयोव्रतो दीक्षितः स्याद्देवेभ्यो ह वा अमृतमपचक्राम।

अग्निरेष पुरस्ताच्चीयते संवत्सर उपरिष्टान्महदुक्थं शस्यते प्रजापतेर्विस्रस्तस्याग्रं रसोऽगचत्।

प्रजापतिः स्वर्गं लोकमजिगांसत् सर्वे वै पशवः प्रजापतिः पुरुषोऽश्वो गौरविरजः स एतै रूपैर्नाशिक्नोत्स एतं वयोविधमात्मानमपश्यदग्निं तं

व्यधत्त सोऽनुपसमुह्यानुपाधायोदपिपतिषत्स नाशक्नोत्स उपसमुह्योपधायो दपतत्तस्मादप्येतर्हि वयांसि यदैव पक्षा उपसमूहन्ते यदा पत्राणि विसृजन्तेऽथोत्पतितुं शक्नुवन्ति।

प्राणो गायत्री चक्षुरुष्णिग्वागनुष्टुम्मनो बृहती श्रोत्रं पङ्क्तिर्य एवायम् प्रजननः प्राण एष त्रिष्टुबथ योऽयमवाङ्प्राण एष जगती तानि वा एतानि सप्त चन्दांसि चतुरुत्तराण्यग्नौ क्रियन्ते।

प्रजापतिं विस्रस्तम् यत्र देवाः समस्कुर्वंस्तमुखायां योनौ रेतो भूतमसिञ्चन्योनिर्वा उखा तस्मा एतत्संवत्सरेऽन्नं समस्कुर्वन्योऽयमग्निश्चितस्तदात्मना पर्यदधुस्तदात्मना परिहितमात्मैवाभवत्तस्मादन्नमात्मना परिहितमात्मैव भवति।

तस्य वा एतस्याग्नेः वागेवोपनिषद्वाचा हि चीयत ऋचा यजुषा साम्नेति नु दैव्याथ यन्मानुष्या वाचाहेतीदं कुरुतेतीदं कुरुतेति तद् ह तया चीयते।

अथ हैतेऽरुणे औपवेशौ समाजग्मुः सत्ययज्ञः पौलुषिर्महाशालो जाबालो बुडिल आश्वतराश्विरिन्द्रद्युम्नो भाल्लवेयो जनः शार्कराक्ष्यस्ते ह वैश्वानरे समासत तेषां ह वैश्वानरे न समियाय।

संवत्सरो वै यज्ञः प्रजापतिः तस्यैतद्द्वारं यदमावास्या चन्द्रमा एव द्वारपिधानः। त्रिर्ह वै पुरुषो जायते एतन्वेव मातुश्चाधि पितुश्चाग्रे जायतेऽथ यं यज्ञ उपनमति स यद्यजते तद्द्वितीयं जायतेऽथ यत्र म्रियते यत्रैनमग्नावभ्यादधति स यत्ततः सम्भवति तत्तृतीयं जायते तस्मात्त्रिः पुरुषो जायत इत्याहुः।

वाग्घ वा एतस्याग्निहोत्रस्याग्निहोत्री मन एव वत्सस्तदिदं मनश्च वाक्च समानमेव सन्नानेव तस्मात्समान्या रज्ज्वा वत्सं च मातरं चाभिदधति तेज एव श्रद्धा सत्यमाज्यम्।

उद्दालको हारुणिः उदीच्यान्वृतो धावयां चकार तस्य निष्क उपाहित आसैतद्ध स्म वै तत्पूर्वेषां वृतानां धावयतामेकधनमुपाहितं भवत्युपवल्हाय बिभ्यतां तान्होदीच्यानां ब्राह्मणान्भीर्विवेद।

उर्वशी हाप्सराः पुरूरवसमैडं चकमे तं ह विन्दमानोवाच त्रिः स्म माह्नो वैतसेन दण्डेन हतादकामां स्म मा निपद्यासै मो स्म त्वा नग्नं दर्शमेष वै न स्त्रीणामुपचार इति।

भृगुर्ह वै वारुणिः वरुणं पितरं विद्ययातिमेने तद्ध वरुणो विदां चकारातिवै मा विद्यया मन्यत इति।

पशुबन्धेन यजते पशवो वै पशुबन्धः स यत्पशुबन्धेन यजते पशुमानसानीति तेन गृहेषु यजेत गृहेषु पशूब्बध्ना इति तेन सुयवसे यजेत सुयवसे पशूब्बध्ना इति जीर्यन्ति ह वै जुह्वतो यजमानस्याग्नयोऽग्नीन्जीर्यतोऽनु यजमानो यजमानमनु गृहाश्च पशवश्च।

तद्यथा ह वै इदं रथचक्रं वा कौलालचक्रं वाप्रतिष्ठितं क्रन्देदेवं हैवेमे लोका अध्रुवा अप्रतिष्ठिता आसुः।

अयं वै यज्ञो योऽयं पवते। तमेत ईप्सन्ति, संवत्सराय दीक्षन्ते। तेषां गृहपतिः प्रथमो दीक्षते। अयं वै लोको गृहपतिः। अस्मिन् वै लोक इदं सर्वं प्रतिष्ठितम्। गृहपता उ वै ससत्रिणः प्रतिष्ठिताः प्रतिष्ठायामेवैतत् प्रतिष्ठाय दीक्षन्ते।। सम्वत्सरे समुद्रप्रतरणोपासनम्।

समुद्रं वा एते प्रतरन्ति। ये संवत्सराय दीक्षन्ते। तस्य तीर्थमेव प्रायणीयोऽतिरात्रः। तीर्थेन हि प्रस्नांति। तद्यत्प्रायणीयमतिरात्रमुपयन्ति।यथा तीर्थेन समुद्रं प्रस्नायुः। तादृक्तत्।।

यद्वालाके त्रिवृदेति सर्वमन्योन्यमभिसंपद्यमानम्। कथं स्विद्यज्ञः पुरुषः प्रजापतिरन्योऽन्यं नातिरिच्यन्त एते।।

दीर्घसत्र ग्निहोत्रं जुह्वत् प्रवसन् म्रियेत। जहुयुरस्मा ३ इ। ना ३ इति। तद्धैके होतव्यं मन्यन्ते। आगन्तोरिति। तदु तथा नकुर्यात्। अतस्थानो वा एष तस्मै। यदेनं शवदह्याया इव जुहुयुः। यज्ञाय वा एष आहुतिभ्यस्तस्थानः। स हैनममृष्यमाणस्तृप्रं सचते॥

सोमो वै राजा यज्ञः प्रजापतिः। तस्यैतास्तन्वः। या एता देवताः। या एता आहुतीर्जुहोति॥

विश्वरूपं वै त्वाष्ट्रमिन्द्रोऽहन्। तं त्वष्टा हतपुत्रोऽभ्यचरत्। सोऽभिचरणीयमपेन्द्रं सोममाहरत्। तस्येन्द्रो यज्ञवेशसं कृत्वा प्रासहासोममपिबत्। स विष्वङ्व्यार्च्छत्। तस्येन्द्रियं वीर्यमङ्गादङ्गादस्रवत्॥

इन्द्रस्य वै यत्रेन्द्रियाणि वीर्याणि व्युदक्रामन्। तानि देवा एतेनैव यज्ञेन पुनः समदधुः। यत्पयोग्रहाश्च सुराग्रहाश्च गृह्यन्ते।इन्द्रियाण्येवास्मिन् तद्वीर्याणि सन्दधाति। उत्तरेऽग्नौ पयोग्रहान् जुह्वति। शुक्रेणैवैनं तत्सोमपीथेन समर्द्धयति॥

एतस्मात् वै यज्ञात् पुरुषो जायते। स यद्ध वाऽअस्मिंल्लोके पुरुषोऽन्नमत्ति तदेनममुष्मिंल्लोके प्रत्यत्ति। स वा एष परिस्रुतो यज्ञस्तायते।अन्नाद्या वै

ब्राह्मणेन परिस्रुत्। स एतस्मादन्नाद्यात् जायते। तं हामुष्मिंल्लोकेऽन्नं न प्रत्यत्ति। तस्मादेष ब्राह्मणयज्ञ एव। यत्सौत्रामणी॥

ब्रह्मौदनं पचति रेत एव तद्धत्ते यदाज्यमुच्छिष्यते तेन रशनामभ्यज्यादत्ते तेजो वा आज्यं प्राजापत्योऽश्वः प्रजापतिमेव तेजसा समर्धयत्यपूतो वा एषोऽमेध्यो यदश्वः।

प्रजापतिर्देवेभ्यो यज्ञान्व्यादिशत् स आत्मन्नश्वमेधमधत्त ते देवाः प्रजापतिमब्रुवन्नेष वै यज्ञो यदश्वमेधोऽपि नोऽत्रास्तु भग इति तेभ्य एतानन्नहोमान्कल्पयद्यदन्नहोमान्जुहोति देवानेव तत्प्रीणाति।

प्रजापतेरक्ष्यश्वयत् तत्परापतत्ततोऽश्वः समभवद्यदश्वयत्तदश्वस्याश्वत्वं तद्देवा अश्वमेधेनैव प्रत्यदधुरेष ह वै प्रजापतिं सर्वं करोति योऽश्वमेधेन यजते सर्व एव भवति सर्वस्य वा एषा प्रायश्चित्तिः सर्वस्य भेषजं सर्वं वा एतेन पाप्मानं देवा अतरन्नपि वा एतेन ब्रह्महत्यामतरंस्तरति सर्वं पाप्मानं तरति ब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजते।

प्रजापतिरकामयत सर्वान्कामानाप्नुयां सर्वा व्यष्टीर्व्यश्नुवीयेति स एतमश्वमेधं त्रिरात्रं यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायजत तेनेष्ट्वा

सर्वान्कामानाप्नोत्सर्वा व्यष्टीर्व्याश्नुत सर्वान्ह वै कामानाप्नोति सर्वा व्यष्टीर्व्यश्नुते योऽश्वमेधेन यजते।

अथ प्रातर्गोतमस्य चतुरुत्तर स्तोमो भवति तस्य चतसृषु बहिष्पवमानमष्टास्वष्टास्वाज्यानि द्वादशसु माध्यन्दिनः पवमानः षोडशसु पृष्ठानि विंशत्यामार्भवः पवमानश्चतुर्विंशत्यामग्निष्टोमसाम।

पुरुषो ह नारायणोऽकामयत अतितिष्ठेयं सर्वाणि भूतान्यहमेवेदं सर्वं स्यामिति स एतं पुरुषमेधं पञ्चरात्रम् यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायजत तेनेष्ट्वात्यतिष्ठत्सर्वाणि भूतानीदं सर्वमभवदतितिष्ठति सर्वाणि भूतानीदं सर्वं भवति य एवम् विद्वान्पुरुषमेधेन यजते यो वैतदेवं वेद।

ब्रह्म वै स्वयम्भु तपोऽतप्यत तदैक्षत न वै तपस्यानन्त्यमस्ति हन्ताहम् भूतेष्वात्मानं जुहवानि भूतानि चात्मनीति तत्सर्वेषु भूतेष्वात्मानं हुत्वा भूतानि चात्मनि सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यम् पर्यैत्तथैवैतद्यजमानः सर्वमेधे सर्वान्मेधान्हुत्वा सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति।

अथास्मै कल्याणं कुर्वन्ति अथास्मै श्मशानं कुर्वन्ति गृहान्वा प्रज्ञानं वा यो वै कश्च म्रियते स शवस्तस्मा एतदन्नं करोति तस्माच्चवान्नं शवान्नं ह वै तच्मशानमित्याचक्षते परोक्षं श्मशा उ हैव नाम पितॄणामत्तारस्ते हामुष्मिंलोकेऽकृतश्मशानस्य साधुकृत्यामुपदम्भयन्ति तेभ्य एतदन्नं करोति तस्माच्मशान्नं श्मशान्नं ह वै तच्मशानमित्याचक्षते परोऽक्षम्।

देवा ह वै सत्रं निषेदुः अग्निरिन्द्रः सोमो मखो विष्णुर्विश्वे देवा अन्यत्रैवाश्विभ्याम्।

अथातो रोहिणौ जुहोति अहः केतुना जुषतां सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहेत्युभावेतेन यजुषा प्राता रात्रिः केतुना जुषतां सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहेत्युभावेतेन यजुषा सायम्।

स वै तृतीयेऽहन् षष्ठे वा द्वादशे वा प्रवर्ग्योपसदौ समस्य प्रवर्ग्यमुत्सादयत्युत्सन्नमिव हीदं शिरस्तद्यदेतमभितो भवति तत्सर्वं समादायाग्रेण शालामन्तर्वेद्युपसमायन्ति।

द्वया ह प्राजापत्याः देवाश्चासुराश्च ततः कानीयसा एव देवा ज्यायसा असुरास्तएषु लोकेष्वस्पर्धन्त।

दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य आस स होवाचाजातशत्रुं काश्यं ब्रह्म ते ब्रवाणीति स होवाचाजातशत्रुः सहस्रमेतस्यां वाचि दद्मो जनको जनक इति वै जना धावन्तीति।

जनको ह वैदेहो बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे तत्र ह कुरुपञ्चालानां ब्राह्मणा अभिसमेता बभूवुस्तस्य ह जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव कः स्विदेषाम् ब्राह्मणानामनूचानतम इति।

जनकं ह वैदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम समेनेन वदिष्य इत्यथ ह यज्जनकश्च वैदेहो याज्ञवल्क्यश्चाग्निहोत्रे समूदतुस्तस्मै ह याज्ञवल्क्यो वरं ददौ स ह कामप्रश्नमेव वव्रे तं हास्मै ददौ तं ह सम्राडेव पूर्वः पप्रच।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यत ओं खं ब्रह्म खं पुराणं वायुरं खमिति ह स्माह कौरव्यायणीपुत्रो वेदोऽयं ब्राह्मणा विदुर्वेदैनेन यद्वेदितव्यम्।

श्वेतकेतुर्ह वा आरुणेयः पञ्चालानां परिषदमाजगाम स आजगाम जैवलम् प्रवाहणं परिचारयमाणं तमुदीक्ष्याभ्युवाद कुमारा३ इति स भो३ इति प्रतिशुश्रावानुशिष्टो न्वसि पित्रेत्योमिति होवाच।

प्राश्नीपुत्रात् आसुरिवासिनः प्राश्नीपुत्र आसुरायणादासुरायण आसुरेरासुरिर्याज्ञवल्क्याद्याज्ञवल्क्य उद्दालकादुद्दालकोऽरुणादरुण उपवेशेरुपवेशिः कुश्रेः कुश्रिर्वाजश्रवसो वाजश्रवा जिह्वावतो बाध्योगाज्जिह्वाया बाध्योगोऽसिताद्वार्षगणादसितो वार्षगणो हरितात्कश्यपाद्धरितः कश्यपः शिल्पात्कश्यपाच्छिल्पः कश्यपः कश्यपान्नैध्रुवेः कश्यपो नैध्रुविर्वाचो वागम्भिण्या अम्भिण्यादित्यादादित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते मणा ह्येष तेजसा सह पयसो रेत आभृतमिति पयसो ह्येतद्रेत आभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तरां समामित्याशिषमेवैतदाशास्तेऽथ चात्वाले मार्जयन्तेऽसावेव बन्धुः।

चतुर्वेदशकाण्डेष्वध्यायोक्ता ऋषयस्तृप्यन्ताम्।

१२.　उपाकर्महवनप्रयोग

अग्नि जलावे –

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ चित्त पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञापय ज्ञापय स्वाहा॥

पुष्पाक्षत ले ध्यान करें ;

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽ३ आसादयादिह॥
ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याँ२ आविवेश॥

तब जल ले आचमन करें ;

ॐ सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

तब घी से सप्तविंशत्याहुति प्रदान करें ;

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥ (मौन)

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय न मम॥

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम॥

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम॥

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा। इदं अन्तरिक्षाय न मम॥

ॐ वायवे स्वाहा। इदं वायवे न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम॥

ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम॥

ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम॥

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यो न मम॥

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम॥

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे न मम॥

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ॥

ॐ देवेभ्यः स्वाहा। इदं देवेभ्यो न मम ॥

ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा। इदं ऋषिभ्यो न मम ॥

ॐ श्रद्धायै स्वाहा। इदं श्रद्धायै न मम ॥

ॐ मेधायै स्वाहा। इदं मेधायै न मम ॥

ॐ सदसस्पतये स्वाहा। इदं सदसस्पतये न मम ॥

ॐ अनुमतये स्वाहा। इदं अनुमतये न मम ॥

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम ॥

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम ॥

ॐ पृथिव्यै स्वाहा। इदं पृथिव्यै न मम ॥

फिर से जल से कुण्ड की चारो तरफ चौकोण मण्डल करें;

ॐ मन्दाकिनि यद्वारि सर्व पाप हरं जलम्।
आचमयार्थे मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

तब प्रयाश्चित्याज्याहुति प्रदान करें:

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा। इदं अग्नयेस्विष्टकृते न मम ॥

ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम ॥

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम ॥

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥

पञ्चवारुणी होम (सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञक) घी से :

ॐ त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञ ꣳ वहास्ययानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥

इसके बाद आवाहित समस्त देवताओं के नाम से हवन भी करें हवन सामग्री से-

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये स्वाहा।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां स्वाहा।

ॐ उमा महेश्वराभ्यां स्वाहा।

ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां स्वाहा।

ॐ शचीपुरन्दराभ्यां स्वाहा।

ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो स्वाहा।

ॐ इष्टदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ कुलदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ ग्रामदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ वास्तुदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ स्थानदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ सर्वेभ्योदेवेभ्यो स्वाहा।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो स्वाहा।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये स्वाहा।

ॐ शालग्रामदेवाय स्वाहा।

ॐ सीतारामाभ्यां स्वाहा।

ॐ राधाकृष्णाभ्यां स्वाहा।

ॐ व्यसाय स्वाहा।

ॐ नवदुर्गायै स्वाहा।

ॐ महाकाल्यै स्वाहा।

ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।

ॐ गणेशगौर्यादिषोडशमात्रिकाभ्यो स्वाहा।

ॐ सूर्यादिनवगृहेभ्यो स्वाहा।

ॐ अधिदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ प्रत्यधि देवताभ्यो स्वाहा।

ॐ पंच्लोकपालदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ दशदिग्पालदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ क्षेत्रपालदेवताभ्यो स्वाहा।

ॐ चतुर्वेदाय स्वाहा।

ॐ गंगादितीर्थेभ्यो स्वाहा।

ॐ सम्पूर्णदेवताभ्यो स्वाहा।

यदि समय अधिक होवें तो पूर्ण मन्त्र द्वारा होम करें, तत्पश्चात वेदमाता गायत्री देवी के मन्त्र से मौन १०८ बार होम करें। सर्व होम पश्चात पूर्णाहुति प्रदान करें-

पहिले हाथ में चावल लेकर अग्नि का विसर्जन करें-

ॐ गच्छ- गच्छ सुर श्रेष्ठ स्व स्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

पुनः चावल लेकर मृडीक अग्नि का आवाहन करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः मृडीक अग्नये नमः, मृडीक अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि , यथोपचारार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

तब पूर्णाहुति प्रदान करें-

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतमाजातमग्निम्| कविँसम्रा जमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्जँ शतक्रतो स्वाहा॥ इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम।

पुनः हाथ में चावल लेकर अग्नि का विसर्जन करें-

ॐ गच्छ- गच्छ सुर श्रेष्ठ स्व स्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

पुनः चावल लेकर वैश्वानर अग्नि का आवाहन करें-

ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर अग्नये नमः, वैश्वानर अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि , यथोपचारार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

तब वसोर्धारा गिरावें-

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।। इदं वाजादिभ्योऽग्नयेविष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम ।

उसके बाद में चारों ओर के कुश को लेकर गाँठ खोल कर घी में डुबा कर बर्हि होम करें-

ॐ देवा गातु विदो गातु वित्वा गातुमितमनसस्पत इमं देव यज्ञ ँ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।

तब आचमन करें-

ॐ यथा बाणप्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तद्वद्देवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका।।

भस्मवन्दन-त्र्यायुषकरण -

कुण्ड में दग्ध पूर्णाहुति के नारियल/सोहारी के राख को श्रुवा के पृष्ठ भागसे लेकर दाहिने हाथ के अनामिका अंगुलि से आचार्य स्वयंतिलककरा।पुनः यजमान को निम्न मन्त्र से भस्म अंकित करे।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः(ललाटे) ।**ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं**(ग्रीवायां) । **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं** (स्कन्द)।**ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं** (हृदि)।

संश्रवप्राशन-

प्रोक्षणी पात्र में छोड़े गये घी को यजमान अनामिका एवं अंगूठासे पीये।

ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।
तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्॥

आचमन कर प्रणीता पात्र में स्थित दोनों पवित्री की ग्रन्थि खोलकर उसे शिर से लगाकर अग्निमें छोड़ दें-

तब जल ले आचमन करें ;

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।

और पूर्णाहुति, वसोर्धारा आदि करने के बाद, पुष्प लेकर अग्नि देव से प्रार्थना करें ;

ॐ श्रद्धा मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि में हव्यवाहन।
भो भो अग्ने ! महाशक्ते! सर्वकर्मप्रसाधन!
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा॥
ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्॥

१३. तर्पण प्रयोग

ॐ विश्वेदेवास आगत श्रृणुता म ऽइम हवम्। एदं बर्हिनिषीदत॥
विश्वेदेवाः शृणुतेम हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
येऽअग्निजिह्वाऽउत वा यजत्राऽआसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयद्ध्वम्॥

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये तर्पणेऽत्रा विहिताः सावधाना भवन्तु ते॥

इस प्रकार आवाहन कर कुश का आसन दें और उन पूर्वाग्र कुशों द्वारा दायें हाथ की समस्त अङ्गुलियों के अग्रभाग अर्थात् देवतीर्थ से ब्रह्मा आदि देवताओं के लिए पूर्वोक्त पात्र में से एक-एक अञ्जलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावें और निम्नाङ्किकत रूप से उन-उन देवताओं के नाम मन्त्र पढ़ते रहें -

देवतर्पण-

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्।
ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्।
ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्।
ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्।
ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्।
ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्।
ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्।

ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्।
ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्।
ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पण-

निम्नाङ्किकत मन्त्र वाक्यों से मरीचि आदि ऋषियों को भी एक-एक अञ्जलि जल दें-

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्।
ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्।
ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्।
ॐ नारदस्तृप्यताम्॥

दिव्य मनुष्य तर्पण-

इसके बाद जनेऊ को माला की भांति गले में धारण करके (अर्थात् निवीती हो) पूर्वोक्त कुशों को दायें हाथ की कनिष्ठिका के मूल-भाग में उत्तराग्र रखकर स्वयं उत्तराभिमुख हो निम्नाङ्किकत मन्त्र वचनों को दो-दो बार पढ़ते हुए दिव्य मनुष्यों के लिए दोदो अञ्जलि यवसहितजल प्राजापत्यतीर्थ (कनिष्ठिका के मूल-भाग) से अर्पण करें।

ॐ सनकस्तृप्यताम्॥ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम्॥
ॐ सनातनस्तृप्यताम्॥ ॐ कपिलस्तृप्यताम्॥
ॐ आसुरिस्तृप्यताम्॥ ॐ वोढुस्तृप्यताम्॥
ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम्॥

दिव्य पितृ तर्पण-

तत्पश्चात् उन कुशों को द्विगुण भुग्न करके उनका मूल और अग्रभाग द क्षिण की ओर किये हुए ही उन्हें अंगूठे और तर्जनी के बीच में रखेऔर स्वयं दक्षिणाभिमुख हो बायें घुटने को पृथ्वी पर रखकर अपसव्यभावसे (जनेऊ को दायें कंधे पर रखकर) पूर्वोक्त पात्रस्थ जलमें काला तिल मिलाकर पितृतीर्थ से (अंगूठा और तर्जनी के मध्य भाग से) दिव्य पितरों के लिए निम्नाङ्ङ्कित मन्त्रवाक्यों को पढ़ते हुए तीनतीन अञ्ज लि जल दें।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

ॐ सोमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

ॐ यमस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

ॐ अर्यमा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् इदंसतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् इदं सतिलं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

यमतर्पण-

इसी प्रकार निम्नलिखित मन्त्र-

वाक्यों को पढ़ते हुए चौदह यमों के लिये भी पितृतीर्थ से ही तीन-तीन अञ्जलि तिल सहित जल दें।

ॐ यमाय नम :॥ॐ धर्मराजाय नम :॥ ॐ मृत्युवे नमः॥

ॐ अन्तकाय नम :॥ॐ वैवस्वताय नम :॥ ॐ कालायनमः॥ॐ सर्व भूतक्षयाय नम :॥ॐ औदुम्बराय नम :॥ ॐ दध्नाय नमः॥ ॐ नीलाय नम :॥ ॐ परमेष्ठिने नम :॥ ॐवृकोदराय नम :॥ ॐ चित्राय नम :॥ ॐ चित्रगुप्ताय नम :॥

दक्षिण की ओर बैठकर आचमन कर बायाँ घुटना मोड़ जनेऊ तथा उत्तरीय को दाहिने कंधे पर कर पितृतीर्थ तर्जनी के मूल तथा कुशा के अग्र भाग और मूल से तिल सहित प्रत्येक नाम से दक्षिण में तीन-तीन अंजलि देवें। पवित्री दाहिने तथा तीन को बायें हाथ की अनामिका में धारण करें।

मनुष्य पितृ तर्पण

आवाहन (तीर्थों में नहीं करे)

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवाह पितॄन्हविषे उत्तवे विषे उत्तवे॥
ॐ आयन्तु नः पितरः सौम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।

तदन्तर अपने पितृगणों का नाम-
गोत्र आदि उच्चारण करते हुए प्रत्येक के लिए पूर्वोक्त विधि से तीन-तीन अञ्जलि तिलसहित जल दे। यथा-

अमुकगोत्र: अस्मत्पिता (बाप) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं स तिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥
अमुकगोत्र: अस्मत्पितामहः (दादा) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥
अमुकगोत्र: अस्मत्प्रपितामहः(परदादा) अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्य ताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥
अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवीवसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥
अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही (दादी) अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥
अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही (परदादी) अमुकी देवी आदित्य रूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधानमः॥ ३॥
अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता (सौतेली मां) अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ २॥

इसके बाद निम्नाङ्किकत नौ मन्त्रों को पढ़ते हुए पितृतीर्थ से जल गिराता रहे।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।

असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥
अंगिरसो नः पितरो नवग्वा ऽअथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।

तेषां वयं सुमतो यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥
आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।

ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्म याँ २॥
उ च न प्रविद्मत्वं वेत्थयति तेजातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ ँ सुकृतं जुषस्व॥

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ२ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्र का पाठ मात्र करे।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवा य नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त।

द्वितीय गोत्रतर्पण-

इसके बाद द्वितीय गोत्र मातामह आदि का तर्पण करे, यहाँ भी पहले की ही भांति निम्नलिखित वाक्यों को तीनबार पढ़करतिलसहित जल की तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थ से दे। यथा -

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥

अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः (बूढ़ेपरनाना) अमुकशर्मा आदित्य रूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः॥ ३॥

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवीवसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यताम् इदंसतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः॥ ३॥

अमुकगोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही (बूढ़ी परनानी) अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलंतस्यै स्वधा नमः॥ ३॥

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए जल गिरावे।

देवासुरास्तथा यज्ञा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः ॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः ॥
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामाप्यायनायैतद् दीयते सलिलं मया ॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकाङ्क्षिणः ॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन वारिणा ॥

१४. उपसंहार

सभी को आसन से खड़ा कराकर आरती करें-

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ।। ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ।।

पुष्पांजलि-

ॐ यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवा।। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । समे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणोददातु।। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य माधिपत्यमयंसमन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येषश्लोकोऽभिगीतो मरुतः परि वेष्टारोमरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नारायणाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वाऽनुसृतस्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

प्रदक्षिणा-

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषां ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

क्षमा-प्रार्थना-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन!।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु में॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर!॥

विसर्जन-

यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च।
गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः! स्वस्थानं परमेश्वराः!॥

१५. पंचगव्य निर्माण

गोमूत्रं गोमय क्षीरं दधि सर्पि कुशोदकम्।
पंचगव्य मिदम् प्रोक्तम्महापातक नाशनम्॥

विष्णु धर्म

तीन भाग देसी गांय का शकृत (गोबर) का रस, तीन ही भाग देसी गांय का कच्चा दूध, दो भाग देसी गांय के दूध की दधि, एक भाग देसी गांय का घृत, आधा अंश गौमूत्र।

गोबर : दूध : दहि : घी : मूत्र

६ : ६ : ४ : २ : १

उदाहरण के रूप में यदि लगभग ५० लोगों के स्नान हेतु पञ्चगव्य बनाना है, तो मात्रा इस प्रकार के है-

गोबर : दूध : दहि : घी : मूत्र

३ लीटर : ३ लीटर : २ लीटर : १ लीटर : ४,५ लीटर

पंचगव्य बनाने हेतु गव्य मिलाते समय निम्न मंत्र का पठन करते हेतु मिलावे -

गौमूत्र-

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंक्त्यासह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा॥
गोमूत्रं सर्वशुद्ध्यर्थं पवित्रं पापशोधनं।
आपदो हरते नित्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहं॥

गोमय-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
अग्रमग्रश्चरन्तीनां औषधीनां रसोदभवम्।
तासां वृषभपत्नीनां पात्रे तन्निक्षिपाम्यहंम्॥

गौदुग्ध-

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य संगथे॥
पयः पुण्यतमं प्रोक्तं धेनुभ्यश्च समृद्भवम्।
सर्वशुद्धिकरं दिव्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्॥

गौ दधि-

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँ षि तारिषत्॥
चंद्रकुन्दसमं शीतं स्वच्छे वारि विवर्जितम्।
किंचिदाम्लरसाले च क्षियेत् पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्॥

गौघृत-

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥
इदं घृतं महदिव्यं पवित्रं पापशोधनम्।
सर्वपुष्टिकरं चैव पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम्।

कुशोदक-

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥
कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दन।
कुशाग्रे शंकरो देवस्तेन युक्तं करोम्यहम्॥

पंचगव्य सेवन करते समय इस मन्त्र को कहें-

ॐ यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठतिमामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

१६. अनुबन्ध

१६.१. श्रावणी उपाकर्म सूरीनाम में









।हरिः ॐ।

पण्डित रुशील रामरूप का जन्म १४ सितम्बर १९९८ को पारामारिबो सूरीनाम में हुआ। ११ वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद अपने गुरु पूज्य पं. श्री मोतिप्रसाद घिसाई-दूबे जी से दीक्षा प्राप्त करने का पात्र बना और उपनीत हुआ। १२ वर्ष की आयु में गुरुजी के सान्निध्य में प्रारम्भिक हिन्दी और कर्मकाण्ड पढ़ना प्रारम्भ किया। १४ वर्ष से वेदाध्ययन करने का सौभाग्य पूज्य गुरुदेव पं. श्री सत्यव्रत शास्त्री जी की कृपा से प्राप्त हुआ। तदनन्तर १५ वर्ष से अपने तीसरे गुरु पूज्य पं. श्री भगवानदत्त रामकुबेर जी के सान्निध्य में ऐतिहासिक, पौराणिक एवं वैदिक ग्रन्थों, धर्मशास्त्रों और संस्कृत का अध्ययन किया। १६ वर्ष की आयु को प्राप्त करने के बाद प्रथम यज्ञ (व्यास) को किया। तब से अब तक अनेकानेक प्रवचन करने का सौभाग्य प्राप्त होता गया।

पूज्य पण्डित जी सनातनधर्मक्षेत्र के अतिरिक्त पाश्चात्य पढ़ाई में सन् २०१६ में मकेनिकल एंजिनेरिंग सूरीनाम के विश्व विद्यालय में प्रारम्भ किया, जिसमें अब ग्रेड्युवेट हो रहा है।

आज २०२० में आप के हाथ में प्रस्तुत यह पण्डित जी की पहली पुस्तक शोभा पा रही है।

ISBN 978-99914-943-1-9